केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो :भारतीय बस्ती दैनिक वेब
www.bhartiyabasti.com
और उसका छपा संस्करण
सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क–bhartiyabasti@gmail.com
मो0 9450567450| 9336715406

दैनिक भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com
के लिये विज्ञापन बुक कराये।
विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम
सम्पर्क
मो0 9450567450
9336715406

भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :46 अंक 188 शनिवार 1 फरवरी 2025 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

एक नजर

15 सी.एस.सी. संचालकों की सेवा बंद करने का निर्देश

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

बस्ती । अपर जिला अधिकारी वित्त एवं राजस्व ने शासन की महत्वपूर्ण योजना फार्मर रजिस्ट्री का का कार्य करने में लापरवाही बरतने वाले 15 सी.एस.सी. संचालको की सभी शासकीय सेवाए तत्काल प्रभाव से बन्द करने का निर्देश दिया है। उन्होने बताया कि प्रत्येक सप्ताह में इस कार्य की समीक्षा किए जाने के उपरान्त भी इन संचालको द्वारा कोई कार्य नही किया जा रहा है, जो अत्यन्त खेदजनक है। भविष्य में शासन की योजनाओं में गम्भीरतापूर्वक सम्यकसुधार लाने पर ही केन्द्र के संचालन की अनुमति दी जायेंगी।

बस्ती के एडीएम की लगी महाकुंभ में डियूटी

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

बस्ती। शासन के निर्देश पर एडीएम बस्ती प्रतिपाल सिंह चौहान प्रयागराज महाकुंभ में पहुंचकर कार्यभार संभाल लिया है। बताते चलें कि महाकुंभ में मौनी अमावस्या पर भगदड़ बाद की स्थिति को नियंत्रित करने के लिए शासन ने कई कदम उठाए हैं। इसी क्रम में मुख्यमंत्री ने 29 जनवरी की शाम को वीडियो कांफ्रेंसिंग की थी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एडीएम बस्ती बस्ती प्रतिपाल सिंह चौहान, एडीएम न्यायिक हरदोई प्रफुल्ल त्रिपाठी और एडीएम सीएस कानपुर आशुतोष दूबे को 30 जनवरी तक महाकुंभ जिले में पहुंचकर कार्यभार ग्रहण करने का निर्देश दिया था। शासन के निर्देशानुसार इन अधिकारियों को माघी पूर्णिमा तक महाकुंभ मेला में कानून व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए तैनात किया है। इन अधिकारियों को भीड़ और अप्रिय स्थिति में नियंत्रण के लिए अनुभवी और एक्सपर्ट माना जाता है। यह अधिकारी मेला प्रशासन का अंग बन व्यवस्था संचालन में सहयोग करेंगे।

महाकुंभ गये युवक की मौत

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

बस्ती। जिले के लालगंज थानाक्षेत्र के बरंण्डा गांव के युवक की प्रयागराज महाकुंभ में हुए मार्ग दुर्घटना में मौत हो गई। उसका इलाज लखनऊ के अस्पताल चल रहा था। बताया जा रहा है कि हीरालाल (46) पुत्र राम बहाल 46 वर्ष 24 जनवरी को गांव के लोगों के साथ ट्रैक्टर–ट्राली पर सवार होकर महाकुंभ स्नान के लिए प्रयागराज गया था। प्रयागराज कुंभ में पहुंचने के बाद वह सब्जी खरीदने के लिए सड़क पार कर रहा था कि अचानक अज्ञात वाहन की चपेट में आ गया। गंभीर चोट आने से मौके पर बेहोश हो गया। साथ गए गांव के लोगों ने हीरालाल को मेला क्षेत्र के केंद्रीय चिकित्सालय भिजवाया। स्थिति को गंभीर देखते हुए डॉक्टर ने लखनऊ मेडिकल कॉलेज के लिए रेफर कर दिया गया था। लखनऊ में इलाज के दौरान हीरालाल की मौत हो गई।

लोक अदालत 8 को

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

बस्ती । राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन आगामी 08 मार्च को जनपद न्यायाधीश विनय कुमार द्विवेदी के निर्देशन में जनपद न्यायालय परिसर, कलेक्ट्रेट मुख्यालय एवं समस्त तहसील मुख्यालयों में किया जायेंगा। उक्त जानकारी देते हुए अपर जिला जज/सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अनिल कुमार ने बताया है कि अधिक से अधिक वादों को चिन्हित कर सुलह–समझौते के आधार पर निस्तारण करायें।

उन्होने बताया कि उक्त राष्ट्रीय लोक अदालत में आपराधिक शमनीय वाद, परकाम्य लिखत अधिनियम की धारा–138 से संबंधित मामलें, बैंक वसूली से संबंधित मामलें, मोटर दुर्घटनाओं से संबंधित प्रतिकर याचिकाएं, श्रम वादों, पारिवारिक वादों, भूमि अधिग्रहण से संबंधित वादों, विद्युत एवं जलकर विवाद (चोरी से संबंधित विवादों सहित), सर्विस में वेतन संबंधी विवाद एवं सेवानिवृत्तिक लाभों से संबंधित विवाद, राजस्व संबंधी वाद, अन्य सिविल वाद (किराया, सुखाधिकार, व्ययादेश, विशिष्ट अनुतोष वाद, आर्बिटेशन (हायर पर्चेज एग्रीमेन्ट से उत्पन्न विवाद) एवं उक्त के अतिरिक्त ऐसे अन्य प्रकार के जिन वादों का निस्तारण सुलह–समझौते के आधार पर हो सकता है, को अधिक से अधिक संख्या में नीयत कर निस्तारित किया जायेंगा।

बजट से मध्यम वर्ग को राहत की उम्मीद

नई दिल्ली (आभा)। शनिवार, 1 फरवरी को देश का बजट पेश होगा। निर्मला सीतारमण बतौर वित्त मंत्री लगातार अपना आठवां बजट पेश करेंगी। बजट 2025 से टैक्सपेयर्स से लेकर किसानों तक और महिलाओं से लेकर युवाओं तक की बड़ी उम्मीदें हैं। बजट में इनकम टैक्स में छूट से लेकर पीएम किसान सम्मान निधि योजना की राशि बढ़ने तक उम्मीदें की जा रही हैं।

बिजनेस स्टैंडर्ड ने सरकारी सूत्रों के हवाले से बताया कि इस बार बजट में नई कर व्यवस्था के तहत 10 लाख रुपये तक की वार्षिक आय को टैक्स फ्री किया जा सकता है। इसके अलावा 15 लाख रुपये से 20 लाख रुपये के बीच की वार्षिक आय के लिए एक नया 25: टैक्स स्लैब पेश करने की योजना है। एक सरकारी सूत्र ने बताया– हम दोनों विकल्पों का मूल्यांकन कर रहे हैं। यदि हमारा बजट अनुमति देता है, तो हम दोनों उपायों को लागू कर सकते हैं। उन्होंने आगे कहा कि सरकार इस तरह की आयकर राहत के प्रभाव के रूप में 50,000 करोड़ रुपये से 1 लाख करोड़ रुपये तक के राजस्व नुकसान को बर्दाश्त करने के लिए तैयार है।

पेट्रोल और डीजल की कीमतें घट सकती हैं। खबर है कि बजट में एक्साइज ड्यूटी में कटौती का ऐलान हो सकता है। अगर ऐसा होता है तो पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कमी आएगी। बता दें कि वर्तमान में पेट्रोल पर 19.90 रुपए और डीजल पर 15.80 रुपए ड्यूटी लगती है।

पीएम किसान योजना की राशि बढ़ सकती है। बोफा की रिपोर्ट के अनुसार, बजट में पीएम किसान योजना की राशि बढ़ सकती है। खबर है किसानों को मिलने वाली सहायता राशि को बढ़कर 12,00 रुपये सालाना किया जा सकता है। बता दें कि पात्र किसानों को तीन किस्तों में सालाना 6,000 ट्रांसफर किया जाता है।

अलग–अलग सूत्रों के मुताबिक, बजट 2025 में सोने पर इंपोर्ट ड्यूटी बढ़ाई जा सकती है। अगर ऐसा होता है तो सोने की कीमतें सकती है। बता दें कि ज्वैलर्स इंडस्ट्री ने सरकार से इंपोर्ट ड्यूटी नहीं बढ़ाने की अपील की है क्योंकि इससे गोल्ड ज्वैलरी के एक्सपोर्ट पर नकारात्मक असर पड़ेगा और गोल्ड स्मग्लिंग भी बढ़ सकती है।

आगामी बजट 2025–26 में किसानों के लिए अहम सौगात की उम्मीद है। सरकार किसान क्रेडिट कार्ड (ज्ञब्ब्) पर लोन की सीमा बढ़ाकर 5 लाख रुपये करने की तैयारी कर रही है। वर्तमान में, किसान क्रेडिट कार्ड (बजट 2025) योजना के तहत अधिकतम उधार सीमा 3 लाख है।

को इस योजना का फायदा मिलता है। इसके अलावा, अटल पेंशन योजना (।च्ल्) की भी रकम बढ़ाई जा सकती है। वर्तमान में इस योजना के तहत 7 करोड़ से अधिक लोग रजिस्टर हैं।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू पर सोनिया गांधी के बयान से भड़के पीएम मोदी

नई दिल्ली (आभा)। कांग्रेस की सीनियर नेता सोनिया गांधी ने बजट सत्र में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के अभिभाषण पर सवाल उठाया था। उन्होंने कहा था कि वह अपने भाषण के दौरान थक गई थीं। अब इसे लेकर वह बुरी तरह घिर गई हैं। भाजपा ने तीखी आलोचना करते हुए माफी की मांग की तो परंपरा से अलग हटकर सीधे राष्ट्रपति भवन ने ही सवाल उठाया। राष्ट्रपति भवन ने कहा कि सोनिया गांधी के बयान से मर्यादा खत्म हुई है। बयान जारी कर राष्ट्रपति भवन ने कहा कि ऐसे खराब बयान से बचा जा सकता था। इससे राष्ट्रपति भवन की गरिमा तार–तार हुई है। दरअसल मीडिया से बातचीत के दौरान सोनिया गांधी ने कहा था, 'पुअर लेडी। वह बहुत थकी नजर आ रही थीं। वह बड़ी मुश्किल से बोल पा रही थीं।'

यही नहीं कांग्रेस नेता के इस बयान पर पीएम नरेंद्र मोदी का भी रिएक्शन आया है। उन्होंने दिल्ली के द्वारका में चुनावी रैली को संबोधित करते हुए कांग्रेस पर हमला बोला और माफी की मांग की। पीएम मोदी ने राष्ट्रपति के भाषण की तारीफ की और कहा कि सोनिया गांधी का बयान उन्हें अपमानित करने वाला है। पीएम मोदी ने कहा, 'उन्होंने संसद को संबोधित किया और देश की जनता की उपलब्धियों को बताया। द्रौपदी मुर्मू जी ओडिशा के जंगलों में आदिवासी परिवार से निकल कर यहां पहुंची हैं। उनकी मातृभाषा हिंदी नहीं हैं और वह उड़िया बोलती हैं। मातृभाषा न होने के बाद भी उन्होंने हिंदी में अच्छे तरीके से बात की और प्रेरित किया। इन्होंने राष्ट्रपति जी को गरीब, थकी हुई कहा।'

आम आदमी पार्टी के 7 विधायकों ने त्याग पत्र दिया

नई दिल्ली (आभा)। दिल्ली में विधानसभा चुनाव से ठीक पहले आम आदमी पार्टी (आप) को बड़ा झटका लगा है। वोटिंग से पांच दिन पहले पार्टी के 7 विधायकों ने इस्तीफा दे दिया है। पार्टी ने इन सातों विधायकों का टिकट काट दिया था जिसको लेकर इनमें नाराजगी थी। राजेश ऋषि, नरेश यादव और रोहित कुमार महरौलिया, भावना गौड़, मदन लाल समेत 7 विधायकों ने शुक्रवार को इस्तीफे का ऐलान कर दिया।

जनकपुरी से दो बार के विधायक राजेश ऋषि ने आम आदमी पार्टी की प्राथमिक सदस्यता समेत सभी पदों से इस्तीफा दे दिया है। टिकट कटने से नाराज चल रहे राजेश ऋषि ने अरविंद केजरीवाल को भेजे इस्तीफे में आरोप लगाया कि पार्टी मूल सिद्धांतों को त्यागकर भ्रष्टाचार में डूब गई है। उन्होंने यह भी लिखा है कि संतोष कोली के बलिदान के साथ गलत व्यवहार किया गया। संतोष कोली के हत्यारे को टिकट दिया गया, यह पार्टी के कार्यकर्ताओं के साथ विश्वासघात है। उन्होंने पार्टी में भाई–भतीजावाद किए जाने का भी आरोप लगाया है।

महाकुम्भः श्रद्धालुओं के भंडारे में मिट्टी डालने वाला दारोगा निलम्बित

प्रयागराज (आभा)। महाकुंभ से गुरुवार को वायरल हैरान करने वाले वीडियो के मामले में एक्शन हो गया है। बेहद शर्मनाक हरकत करने वाले एसएचओ को सस्पेंड कर दिया गया है। मामला श्रद्धालुओं के भंडारे में मिट्टी डालने का है। इस वीडियो को समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने पोस्ट करते हुए जनता से संज्ञान लेने की बात लिखी थी। इसी के बाद हरकत में आए अफसरों ने तत्काल मामले की जांच का आदेश दिया। एससीपी की जांच रिपोर्ट के बाद एसएचओ को सस्पेंड कर दिया गया।

मामला प्रयागराज के सोरांव इलाके का है। यहां फाफामऊ–सोरांव सीमा पर मलाक चतुरी गांव में सड़क किनारे पटरी पर तीन बड़े–बड़े भगोनों में महाकुंभ के श्रद्धालुओं के लिए खाना बनाया जा रहा है। इसी दौरान वहां पहुंचे सोरांव थाने के इंस्पेक्टर ब्रजेश तिवारी ने प्रसाद ग्रहण करने वाले श्रद्धालुओं के कारण जाम लगने की बात कही। भंडारा बंद करने का आदेश दिया। भंडारा कर रहे लोगों ने एसएचओ की बात मानने से इनकार कर दिया तो आवेश में आए इंस्पेक्टर ने चूल्हे पर बन रहे खाने में मिट्टी डाल दी। उसकी हरकत देखकर हर कोई हैरान रह गया।

जबकि दूसरी ओर महाकुंभ भगदड़ की जांच के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा गठित तीन सदस्यीय न्यायिक आयोग शुक्रवार को प्रयागराज में संगम नोज स्थित घटनास्थल पर पहुंचा और अधिकारियों से जानकारी ली। इसके बाद आयोग के सदस्यों ने एसआरएन अस्पताल में भर्ती घायलों से पूछताछ की।

फारेस्ट गार्ड पर मनमानी का आरोप सौंपा ज्ञापन, जांच, कार्रवाई की मांग

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

बस्ती । भारतीय जनता युवा मोर्चा के जिला मंत्री प्रदीप चौधरी ने शुक्रवार को जिलाधिकारी के प्रशासनिक अधिकारी को डीएम को सम्बोधित ज्ञापन सौंपा। मांग किया कि वन विभाग में वन विहार में वन रक्षक 'फारेस्ट गार्ड' पद पर कार्यरत अमरनाथ सिंह के गतिविधियों की जांच कराकर कार्रवाई की मांग किया है।

ज्ञापन में कहा गया है कि बस्ती रेंज में वन रक्षक पद पर कार्यरत अमरनाथ सिंह अपने दायित्वों का निर्वहन न करके कार्यालय के बाबू का दायित्व निभा रहे हैं। वे बड़े पैमाने पर मनमानी कर विभागीय राजस्व को चूना लगा रहे हैं। बस्ती रेंज के बड़े मोटे पेड़ गायब है जिन्हें कटवाकर बेंच लिया गया। सुरक्षा में लगे कटीले तार और खम्भे गायब है। अमरनाथ सिंह पर विभागीय स्तर पर मनमानी का आरोप लगाते हये भारतीय जनता युवा मोर्चा के जिला मत्री प्रदीप चौधरी ने मांग किया है कि उनके गतिविधियों की उच्च स्तरीय जांच कराकर विभागीय स्तर पर दण्डित कराया जाय।

डीएम ने किया जिला कारागार में चल रहे निर्माण कार्यों का निरीक्षण

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

बस्ती । जिलाधिकारी रवीश गुप्ता ने जिला कारागार का आकस्मिक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होने निर्माणाधीन 30 क्षमता की दो नग बैरक, सर्किल/पार्टीशन वॉल व जेल के बाहर टाइप–3 के आवास व कॉर्नर वाच टॉवर को देखा। उन्होने पाया कि जेल परिसर के अन्दर सर्किल/पार्टीशन दीवार का निर्माण चल रहा है तथा अभी गेट का निर्माण नहीं हुआ है। कार्यदायी संस्था उत्तर प्रदेश विधायन एवं निर्माण सहाकारी संघ लि०, बस्ती द्वारा उक्त निर्माण कार्य कराया जा रहा है।

निरीक्षण में उन्होने पाया कि निर्माणाधीन बैरको का छत ढालने का कार्य प्रगति पर है एवं जेल परिसर के बाहर चारों कोनों पर वाच टॉवर निर्माणाधीन है तथा टाइप–3 के आवास का निर्माण अन्तिम चरण में है। खिड़कियों में दरवाजे नहीं लगे है। इस स्थिति पर उन्होने अवर अभियन्ता को निर्देशित किया कि यथाशीघ्र निर्माण कार्य पूर्ण करवायें। अवर अभियन्ता द्वारा बताया गया कि दिनाँक जुलाई 2026 तक निर्माण कार्य पूर्ण किया जाना है किन्तु सितम्बर 2025 तक ही कार्य पूर्ण करा लिया जायेगा। निरीक्षण के दौरान संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहें।

तूल पकड़ रहा है दूकान में घुसकर मार पीट का मामलाः एसपी से लगाया न्याय की गुहार

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

बस्ती । गांधीनगर त्रिपाठी गली में स्थित गौरी चूडी केन्द्र में घुसकर मारपीट कर धमकी देने का मामला तूल पकड़ता जा रहा है। शुक्रवार को पिकौरा बक्स के सभासद भाजपा नेता रमेश गुप्ता और उनके भाई दिनेश कुमार गुप्ता ने पुलिस अधीक्षक से मिलकर दोषियों के विरूद्ध मुकदमा दर्ज कराते हुये न्याय की गुहार लगाया। रमेश गुप्ता ने प्रेस को जारी विज्ञप्ति के माध्यम से बताया कि एसपी ने मामले को गंभीरता से लिया और सी.ओ. सिटी को मामले की जांच करने का निर्देश दिया है।

पिकौरा बक्स के सभासद भाजपा नेता रमेश गुप्ता और उनके भाई दिनेश कुमार ने संयुक्त रूप से बताया कि गांधीनगर स्थित त्रिपाठी गली में उनकी गौरी चूडी केन्द्र नाम की दूकान है। गत 23 जनवरी को दिन में लगभग 11 बजे पिकौरा बक्स निवासी राजकुमार गुप्ता, कृष्ण कुमार गुप्ता, ऋषि गुप्ता, अमित उर्फ सोनू गुप्ता, शिवम गुप्ता आदि ने पारिवारिक रंजिश के चलते दूकान में घुसकर उन्हें मारा पीटा। दूकान के सामान में तोड़फोड के साथ ही कई सामान जबरिया उठा ले गये। भाई विजय कुमार, स्थानीय नागरिकों और गांधीनगर चौकी पुलिस की मदद से उनकी जान बची। बताया कि मामले की सूचना चौकी प्रभारी गांधीनगर, प्रभारी निरीक्षक कोतवाली को लिखित तहरीर देकर दोषियों के विरूद्ध मुकदमा दर्ज कराने का आग्रह किया था। कोतवाली पुलिस ने विपक्षियों की ओर से मुकदमा दर्ज कर लिया किन्तु उनका पक्ष नहीं सुना गया। मांग किया कि उनके दूकान और परिवार के सुरक्षा की साथ ही दोषियों के विरूद्ध मुकदमा पंजीकृत कराकर न्याय दिलाया जाय।

व्यापारियों ने दबंगों के उत्पीड़न के विरोध में डीआईजी, एसपी से लगाया न्याय की गुहार

–व्यापारियों पर दर्ज मनगढन्त मुकदमा वापस कराने की मांग

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

बस्ती। शुक्रवार को उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मण्डल के प्रदेश उपाध्यक्ष जगदीश अग्रहरि के नेतृत्व में पदाधिकारियों और व्यापारियों के एक प्रतिनिधि मण्डल ने डीआईजी और पुलिस अधीक्षक को पत्र देकर न्याय की मांग किया। पत्र में कहा गया है कि लालगंज थाने की पुलिस ने मनमाने तरीके से 17 नामजद और 20 अज्ञात व्यापारियों के विरूद्ध कथित जाम को लेकर बीनएस की धारा के तहत मुकदमा दर्ज किया है। इसे लेकर आये दिन व्यापारियों का उत्पीड़न किया जा रहा है। मांग किया है कि मामले की जांच कराकर मुकदमा समाप्त कराया जाय और व्यापारियों का उत्पीड़न बंद हो।

डीआईजी और पुलिस अधीक्षक को पत्र देने के बाद उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मण्डल के प्रदेश उपाध्यक्ष जगदीश अग्रहरि ने बताया कि कुदरहा कस्बे में कुछ दबंग और मनबढ लोगों के द्वारा व्यापारियों का उत्पीड़न किया जा रहा है। गत 16 जनवरी को विशुनपुरा निवासी रामाशीष कुछ साथियों के साथ नशे में धुत होकर चाऊमीन, मोमोज के दुकानदार सोनू पुत्र कोमल के ठेले पर आये और जब सोनू ने कहा कि चाऊमीन, मोमोज बिक गया है अब नहीं है तो गाली गलौज करते हुये सोनू को बुरी तरह से मारा पीटा, ठेला और सामान पलट दिया। मामले की सूचना कुदरहा पुलिस चौकी पर दिया गया और बाद में लालगंज पुलिस ने पांच दिन बाद मामले में दोनों पक्षों का मुकदमा दर्ज कर लिया। पुलिस ने मामले में छानबीन और कार्रवाई नहीं किया इससे रामाशीष और उनके साथियों बैसिया निवासी ब्रम्हदेव चौधरी, पवन यादव और कुदरहा निवासी नरेन्द्र चौधरी ने कुदरहा के उन व्यापारियों को धमकाना शुरू किया जिन्होने सोनू के मामले में मदद किया था। यही नहीं लालगंज पुलिस ने न जाने किस दबाव में मनमाने तरीके से 17 नामजद और 20 अज्ञात व्यापारियों के विरूद्ध कथित जाम को लेकर बीनएस की धाराओं में मुकदमा पंजीकृत कर लिया। आये दिन पुलिस द्वारा व्यापारियों को धमकी दी जा रही है।

व्यापारियों के प्रतिनिधि मण्डल ने मांग किया कि दोषियों के विरूद्ध कार्रवाई के साथ ही कथित जाम को लेकर दर्ज मुकदमा वापस किया जाय। पत्र सौंपने के दौरान मुख्य रूप से श्रवण अग्रहरि, पवन अग्रहरि, अनिल अग्रहरि, संजय गुप्ता, जुवेर अहमद, रौनक अग्रहरि, दिनेश अग्रहरि, दुर्गा अग्रहरि, प्रदीप अग्रहरि, सुनील मोदनवाल, सतीश मोदनवाल, आशीष मोदनवाल, रामरतन, राम सगुन आदि शामिल रहे।

शिक्षकों के प्रतिनिधि मण्डल ने बीएसए को सौंपा ज्ञापन

-अपार आईडी को लेकर रोके गये शिक्षकों के वेतन भुगतान का आदेश -एमआईएस शैलेश कुमार बीआरसी से हटाये गये

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

बस्ती। शुक्रवार को उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ जिलाध्यक्ष उदयशंकर शुक्ल के नेतृत्व में संघ पदाधिकारियों और शिक्षकों के प्रतिनिधिमंडल ने जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी अनूप कुमार तिवारी से कार्यालय में मुलाकात के बाद ज्ञापन सौंप कर समस्याओं के समाधान की मांग किया। प्रतिनिधि मण्डल ने अपार आईडी फीडिंग में शिथिलता को लेकर हजारो अध्यापकों के रोके गए वेतन को बहाल करने और विकास क्षेत्र गौर के एमआईएस शैलेश कुमार अग्रहरी को बीआरसी से हटाने का अनुरोध किया ।

संघ जिलाध्यक्ष उदयशंकर शुक्ल ने बताया कि संगठन के ज्ञापन का संज्ञान लेकर बीएसए ने अपार आईडी को लेकर रोके गए हजारों शिक्षको के वेतन भुगतान का आदेश जारी कर दिया । उन्होने गौर के एमआईएस की आईडी पासवर्ड दूसरे को देकर उन्हें बीआरसी पर जाने से रोक दिया । बताया कि बीएसएस से चार सौ शिक्षकों के चयन वेतनमान के सम्बन्ध में बीएसए ने आश्वासन दिया कि दो दिन के भीतर विभागीय स्तर पर वार्ता के बाद निर्णय लिया जायेगा। जूनियर हाई स्कूल के प्रधानाध्यापकों के खाते से 800 रूपया टेबलेट डाटा क्रय करने हेतु धनराशि काट ली गई थी जबकि विभाग द्वारा जूनियर हाई स्कूल के प्रधानाध्यापकों को टेबलेट दिया ही नहीं दिया गया था।

बीएसए ने कहा कि इस धनराशि को वापस किये जाने की कार्यवाही शीघ्र कराया जायेगा।

बीएसए को ज्ञापन देते समय अखिलेश मिश्र, महेश कुमार, राजकुमार सिंह, रीता शुक्ला, चन्द्रभान चौरसिया, भैया राम, देवेंद्र वर्मा ,राम भरत, वर्मा विनोद यादव, नरेन्द्र दुबे, विवेक गौतम, अनूप कुमार चौधरी, दिनेश वर्मा सहित अनेक शिक्षक मौजूद रहे।

"मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"—वेडेल फिलिप्स

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 1 फरवरी 2025 शनिवार

सम्पादकीय

सरकारी स्कूल और शिक्षा

सरकारी विद्यालयों में दाखिले और पढ़ाई—लिखाई के स्तर को लेकर प्रायरू असंतोष ही जताया जाता रहा है। मगर इस बार ग्रामीण क्षेत्रों के सरकारी स्कूलों की वार्षिक शिक्षा स्थिति रपट यानी 'असर' में यह तथ्य उजागर हुआ है कि सरकारी स्कूलों में दाखिले का स्तर फिर से कोविड काल के पहले के स्तर पर पहुंच गया है, मगर उनमें पढ़ाई—लिखाई का स्तर कुछ बेहतर हुआ है। गौरतलब है कि कोरोना काल से पहले छह से चौदह वर्ष आयुवर्ग के बच्चों का सरकारी स्कूलों में नामांकन हर वर्ष बढ़ रहा था।

2006 से 2018 के बीच सरकारी स्कूलों में बच्चों का दाखिला 18.7 फीसद से बढ़ 2014 तक 30.8 फीसद पर पहुंच गया था। फिर 2018 तक इसी स्तर पर बना रहा। मगर कोरोना काल में सरकारी स्कूलों में छह से चौदह वर्ष आयु के बच्चों का अनुपात 2018 के 65.6 फीसद से बढ़ कर 2022 में 72.9 हो गया। मगर बीते वर्ष में यह अनुपात फिर से 2018 के स्तर पर पहुंच गया, यानी 66.8 फीसद पर वापस आ गया है।

ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी स्कूलों में बच्चों के नामांकन में कमी आने का एक कारण निजी स्कूलों की तरफ लोगों का फिर से बढ़ता रुझान बताया जा रहा है। जाहिर है, लोगों का सरकारी स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता को लेकर भरोसा कायम नहीं रह पाया है। कोरोना काल में इसलिए बहुत सारे लोगों ने अपने बच्चों को निजी स्कूलों से निकाल कर सरकारी स्कूलों में डाला था कि उस वक्त उनकी कमाई बंद हो गई थी। इसमें एक अच्छी बात यह हुई है कि ग्रामीण क्षेत्र के स्कूलों में शिक्षा के स्तर में थोड़ा सुधार हुआ है।

स्मार्ट फोन इस्तेमाल करने वाले बच्चों की संख्या तेजी से बढ़ी है। मगर इसमें चिंता की बात यह भी है कि स्कूलों में पांच वर्ष आयु वर्ग के बच्चों की संख्या लगातार घट रही है। 2018 में यह आंकड़ा 25.6 था, जो 2022 में घट कर 22.7 फीसद हुआ और 2024 में गिर कर चिंताजनक 16.7 फीसद पर पहुंच गया। यानी ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता बेहतर करने के लिए अभी बहुत कुछ किया जाना है।

आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस वरदान या खतरा

तकनीकी विकास का उद्देश्य सदा मानवीय कामकाज को आसान और उत्कृष्ट बनाना होता है। मगर, इसके पीछे यह चुनौती भी स्वतरू जुड़ी होती है कि इसके दुरुपयोग को कैसे रोका जाए। अराजक किस्म के लोग हमेशा तकनीक का उपयोग अव्यवस्था फैलाने या व्यवस्थागत ढांचे में सेंधमारी के लिए करते हैं। कृत्रिम मेधा यानी आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस नाम की नई तकनीक आने के बाद इसकी चिंता और बढ़ गई है। शुरू से ही लोग विरोध कर रहे हैं कि कृत्रिम मेधा को प्रश्रय देने से लोगों की रचनात्मकता, निजता और वित्तीय सुरक्षा खतरे में पड़ जाएगी। इसलिए कि यह ऐसी तकनीक है, जो दुनिया भर में उपलब्ध सूचनाओं को खंगाल कर किसी भी व्यक्ति को वांछित सूचनाएं उपलब्ध करा देता है।

हालांकि एल्गोरिद्म तकनीक सूचनाओं की छानबीन पहले से ही करती आ रही है। कृत्रिम मेधा के इस्तेमाल से यह काम बड़े स्तर पर और कई गुना अधिक तेजी से किया जा सकता है। इसलिए दुनिया भर के देश चिंतित हैं कि डेटा संग्रह में सेंधमारी करने वाले इस तकनीक का बड़े पैमाने पर दुरुपयोग करेंगे। यह तकनीक अभी अपने प्रारंभिक चरण में है, मगर इसका दुरुपयोग व्यापक स्तर पर दिखाई देने लगा है।

दरअसल, विश्व आर्थिक मंच के सम्मेलन में कई देशों ने रेखांकित किया कि कृत्रिम मेधा के अनियंत्रित प्रसार पर लगाम कसने की जरूरत है। स्पेन के प्रधानमंत्री ने यूरोपीय संघ से आह्वान किया कि गलत सूचना और साइबर उत्पीड़न पर अंकुश लगाने के लिए कठोर कदम उठाया जाना चाहिए। एल्गोरिद्म में पारदर्शिता के लिए शक्तियों के विस्तार की जरूरत है। संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंतोनियो गुतारेस ने कृत्रिम मेधा को वैश्विक चुनौती बताते हुए कड़ी चेतावनी जारी की, इसे मानवता के लिए एक बड़ा जोखिम बताया और इस मामले में सरकारी और नीजी सतर पर एकीकृत कार्रवाई पर जोर दिया। सही है कि चिकित्सा, शिक्षा, संचार, अभियांत्रिकी आदि क्षेत्रों में कृत्रिम मेधा का सशक्त योगदान हो सकता है। इससे आगे की तकनीक विकसित करने में बहुत आसानी होगी, मगर इसके प्राथमिक चरण में ही जिस तरह वित्तीय हेराफेरी, लोगों के उत्पीड़न, गलत सूचनाएं प्रसारित कर बदअमनी फैलाने की कोशिशें लगातार देखी जा रही हैं, उससे चिंता बढ़ना स्वाभाविक है। इसके दुरुपयोग पर अंकुश लगाने की तकनीक विकसित करने की उम्मीद उन्हीं लोगों से की जाती है, जिन्होंने इसका विकास किया है। मगर सरकारें इसके लिए केवल उनके भरोसे नहीं बैठ सकतीं। कानूनी शिकंजा के बिना व्यावसायिक निरंकुशता को रोकना मुश्किल ही बना रह सकता है।

जैसे—जैसे दुनिया डिजिटल तकनीक पर आश्रित होती जो रही है, हर काम डिजिटल उपकरणों और इंटरनेट से जोड़ा जाने लगा है, उसमें कृत्रिम मेधा बड़ा खतरा बन कर उभर रही है। हर रोज दुनिया भर में लाखों ऐसे मामले दर्ज हो रहे हैं, जिनमें साइबर सेंधमार लोगों के बैंक खातों से पैसे उड़ा लेते हैं। कृत्रिम मेधा के जरिए किसी बड़े अधिकारी, अपने ही मित्र और परिजन या फिर जाल में फंसे आदमी का ही चेहरा और आवाज चस्पां कर के उससे ठगी कर ली जाती है। जाने—पहचाने चेहरों का इस्तेमाल कर गलत सूचनाएं प्रसारित कर दी जाती हैं, जिससे लोगों में भ्रम और कई बार उत्तेजना फैल जाती है। भारत में ऐसी घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं, जिसे लेकर प्रधानमंत्री तक को सावधान रहने की अपील करनी पड़ी। उम्मीद है कि इस समस्या पर विश्व आर्थिक मंच से उठी आवाज पर संजीदगी नजर आएगी।

वित्तीय वर्ष 2025—26 के केंद्रीय बजट पर टिकी निगाहें

— प्रहलाद सबनानी—

वित्तीय वर्ष 2024—25 की पहली छमाही (अप्रेल—सितम्बर 2024) में भारत की आर्थिक विकास दर कुछ कमजोर रही है। प्रथम तिमाही (अप्रेल—जून 2024) में तो सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि दर गिरकर 5.2 प्रतिशत के निचले स्तर पर आ गई थी। इसी प्रकार द्वितीय तिमाही (जुलाई—सितम्बर 2024) में भी सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि दर 5.4 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया गया है। इससे वित्तीय वर्ष 2024—25 में यह वृद्धि दर घटकर 6.6 प्रतिशत से 6.8 प्रतिशत के बीच रहने का अनुमान है, जबकि वित्तीय वर्ष 2023—24 में भारत के सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि दर 8.2 प्रतिशत की रही थी। वित्तीय वर्ष 2024—25 की प्रथम छमाही में आर्थिक विकास दर के कम होने के कारणों में मुख्य रूप से देश में सम्पन्न हुए लोक सभा चुनाव है और आचार संहिता के लागू होने के चलते केंद्र सरकार के पूंजीगत खर्चों एवं अन्य खर्चों में भारी भरकम कमी दृष्टिगोचर हुई है। साथ ही, देश में मानसून की स्थिति भी ठीक नहीं रही है।

केंद्र सरकार ने हालांकि मुद्रा स्फीति पर अंकुश लगाने में सफलता तो अर्जित कर ली है परंतु उच्च स्तर पर बनी रही मुद्रा स्फीति के कारण कुल मिलाकर आम नागरिकों, विशेष रूप से मध्यमवर्गीय परिवारों, की खर्च करने की क्षमता पर विपरीत प्रभात जरूर पड़ा है और कुछ मध्यमवर्गीय परिवारों के गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे परिवारों की श्रेणी में जाने का खतरा उत्पन्न हो गया है। किसी भी देश में मध्यमवर्गीय परिवारों की जितनी अधिक संख्या रहती है, उस देश की आर्थिक विकास दर ऊंचे स्तर पर बनी रहती है क्योंकि मध्यमवर्गीय परिवार ही विभिन्न प्रकार के उत्पादों (दोपहिया वाहन, चारपहिया वाहन, फ्रिज, एयर कंडीशनर जैसे उत्पादों एवं नए फ्लेट्स एवं भवनों आदि) को खरीदने पर अपनी आय के अधिकतम भाग का उपयोग करता है। इससे आर्थिक चक्र में तीव्रता आती है और इन उत्पादों की बाजार में मांग के बढ़ने के चलते इनके उत्पादन को विभिन्न कम्पनियों द्वारा बढ़ाया जाता है, इससे इन कम्पनियों की आय एवं लाभप्रदता में वृद्धि होती है एवं देश में रोजगार के नए अवसर निर्मित होते हैं।

भारत में पिछले कुछ समय से मध्यमवर्गीय परिवारों की व्यय करने की क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ा है अतः दिनांक 1 फरवरी 2025 को केंद्र सरकार की वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारामन से अब यह अपेक्षा की जा रही है कि वे वित्तीय वर्ष 2025—26 के केंद्र सरकार के बजट में मध्यमवर्गीय परिवारों के लिए विशेष रूप से आय कर में छूट की घोषणा करेंगी। देश के कई अर्थशास्त्रियों का तो यह भी कहना है कि न केवल आय कर में बल्कि कारपोरेट कर में भी कमी की घोषणा की जानी चाहिए। इनफोसिस के संस्थापक सदस्यों में शामिल श्री मोहनदास पई का तो कहना है कि 15 लाख से अधिक की आय पर लागू 30 प्रतिशत की आय कर की दर को अब 18 लाख से अधिक की आय पर लागू करना चाहिए। आय कर मुक्त आय की सीमा को वर्तमान में लागू 7.75 लाख रुपए की राशि से बढ़ाकर 10 लाख रुपए कर देना चाहिए। आयकर की धारा 80सी के अंतर्गत किए जाने निवेश की सीमा को भी 1.50 लाख रुपए की राशि से बढ़ाकर 2 लाख रुपए कर देना चाहिए। मकान निर्माण हेतु लिए गए ऋण पर अदा किए जाने वाले ब्याज पर प्रदान की जाने वाली आयकर छूट की सीमा को 2 लाख रुपए से बढ़ाकर 3 लाख रुपए किया जाना चाहिए।

फरवरी 2025 माह में ही भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा मोनेटरी पोलिसी की घोषणा भी होने जा रही है। भारतीय रिजर्व बैंक से अब यह अपेक्षा की जा रही है कि वे रेपो दर में कम से कम 25 अथवा 50 आधार बिंदुओं की कमी तो अवश्य करेंगे। क्योंकि, पिछले लगातार लगभग 24 माह तक रेपो दर में कोई भी परिवर्तन नहीं करने के चलते मध्यमवर्गीय परिवारों द्वारा मकान निर्माण एवं वाहन पहिया वाहन आदि खरीदने हेतु बैंकों से लिए गए ऋण की किश्त की राशि का बोझ बहुत अधिक बढ़ गया है। बैंकों से लिए गए इस प्रकार के ऋणों एवं माइक्रो फाइनैन्स की किश्तों की अदायगी में चूक की घटनाएं भी बढ़ती हुई दिखाई दे रही हैं। अब मुद्रा स्फीति की दर खाद्य पदार्थों (फलों एवं सब्जियों आदि) के कुछ महंगे होने के चलते ही उच्च स्तर पर आ जाती है जबकि कोर मुद्रा स्फीति की दर तो अब नियंत्रण में आ चुकी है। खाद्य पदार्थों की महंगाई को ब्याज दरों को उच्च स्तर पर बनाए रखकर कम नहीं किया जा सकता है। अतः भारतीय रिजर्व बैंक को अब इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

वित्तीय वर्ष 2024—25 की प्रथम तिमाही में सम्पन्न हुए लोक सभा चुनाव के चलते देश में पूंजीगत खर्चों में कमी दिखाई दी है। इसीलिए अब लगातार यह मांग की जा रही है कि देश में वन नेशन वन इलेक्शन कानून को शीघ्र ही लागू किया जाना चाहिए क्योंकि बार बार देश में चुनाव होने से केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा आचार संहिता के लागू होने के चलते अपने बजटीय खर्चों को रोक दिया जाता है जिससे देश का आर्थिक विकास प्रभावित होता है। अतः वित्तीय वर्ष 2025—26 के लिए लोक सभा में पेश किए जाने वाले बजट में पूंजीगत खर्चों को बढ़ाने पर गम्भीरता दिखाई जाएगी। हालांकि वित्तीय वर्ष 2022—23 के बजट में 7.50 लाख करोड़ रुपए के पूंजीगत खर्चों का प्रावधान किया गया था, वित्तीय वर्ष 2023—24 के बजट में 10 लाख करोड़ रुपए एवं वित्तीय वर्ष 2024—25 के बजट में 11.11 लाख करोड़ रुपए के पूंजीगत खर्चों का प्रावधान किया गया था। अब वित्तीय वर्ष 2025—26 के लिए कम से कम 15 लाख करोड़ रुपए के पूंजीगत खर्चों का प्रावधान किये जाने की सम्भावना व्यक्त की जा रही है। इससे देश में धीमी पड़ रही आर्थिक गतिविधियों को तेज करने में सहायता मिलेगी और रोजगार के करोड़ों नए अवसर भी निर्मित होंगे, जिसकी वर्तमान समय में देश को अत्यधिक आवश्यकता भी है।

विभिन्न राज्यों द्वारा चलायी जा रही फ्रीबीज की योजनाओं पर भी अब अंकुश लगाए जाने के प्रयास किए जाने चाहिए। इन योजनाओं से देश के आर्थिक विकास को लाभ कम और नुक्सान अधिक होता है। केरल, पंजाब, हिमाचल प्रदेश एवं दिल्ली की स्थिति हम सबके सामने है। इस प्रकार की योजनाओं को चलाने के कारण इन राज्यों के बजटीय घाटे की स्थिति दयनीय स्थिति में पहुंच गई है। पंजाब तो किसी समय पर देश के सबसे सम्पन्न राज्यों में शामिल हुआ करता था परंतु आज पंजाब में बजटीय घाटा भयावह स्थिति में पहुंच गया है। जिससे ये राज्य आज पूंजीगत खर्चों पर अधिक राशि व्यय नहीं कर पा रहे हैं क्योंकि इन राज्यों की न तो आय बढ़ रही है और न ही बजटीय घाटे पर नियंत्रण स्थापित हो पा रहा है।

पिछले कुछ समय से भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश भी कम हो रहा है। यह सितम्बर 2020 तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद का 4.3 प्रतिशत था जो अब गिरकर सकल घरेलू उत्पाद का 0.8 प्रतिशत के स्तर तक नीचे आ गया है। वित्तीय वर्ष 2025—26 के बजट में इस विषय पर भी गम्भीरता से विचार किया जाएगा। वित्तीय वर्ष 2019 के बजट में कोरपोरेट कर की दरों में कमी की घोषणा की गई थी, जिसका बहुत अच्छा प्रभाव विदेशी प्रत्यक्ष निवेश पर पड़ा था और सितम्बर 2020 में तो यह बढ़कर सकल घरेलू उत्पाद का 4.3 प्रतिशत तक पहुंच गया था। अब एक बार पुनः इस बजट में कोरपोरेट कर में कमी करने पर भी विचार किया जा सकता है। वित्तीय वर्ष 2025—26 के बजट में रोजगार के अधिक से अधिक अवसर निर्मित करने वाले उद्योगों को भी कुछ राहत प्रदान की जा सकती है क्योंकि आज देश में रोजगार के करोड़ों नए अवसर निर्मित करने की महती आवश्यकता है। विशेष रूप से सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग को विशेष सुविधाएं प्रदान की जा सकती है। हां, साथ में तकनीकी आधारित उद्योगों को भी बढ़ावा देना होगा क्योंकि वैश्विक स्तर पर भी हमारे उद्योगों को हमें प्रतिस्पर्धी बनाना है। ग्रामीण इलाकों में आज भी भारत की लगभग 60 प्रतिशत आबादी निवास करती है अतः कृषि क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र में कुटीर एवं लघु उद्योगों पर अधिक ध्यान इस बजट के माध्यम से दिया जाएगा, ताकि रोजगार के अवसर ग्रामीण इलाकों में ही निर्मित हों और नागरिकों के शहर की ओर हो रहे पलायन को रोका जा सके।

डीपसीक की अमेरिकी वर्चस्व को चुनौती

—डॉ. संजय वर्मा—

अमेरिकी सत्ता पर दोबारा काबिज होने के पहले ही दिन राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक चीनी एप टिकटॉक पर अपने देश में लगी पाबंदी हटाने का ऐलान किया, तो उन्हें अहसास नहीं रहा होगा कि एक अन्य चीनी क्रांति उनकी नींद हराम करने के लिए पैदा हो गई है। यह क्रांति कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उस दायरे में हुई है, जिसमें ओपन एआई, गूगल और फेसबुक आदि इंटरनेट कंपनियों के चौटजीपीटी, जेमनाई (बार्ड), को—पायलट और मेटा एआई जैसे अमेरिकी टूल या सॉफ्टवेयर पूरी दुनिया पर कब्जा किए हुए बैठे हैं। बात डीपसीक आर—1 नामक उस चीनी चौटबॉट की है, जिसके आगमन ने एआई बरतने वालों में यह कौतूहल जगा दिया है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता वाले अमेरिकी टूल्स या सॉफ्टवेयर के मुकाबले ग्राहकों को इस चीनी इंतजाम की सुविधाएं मुफ्त हासिल होंगी और ज्यादा तेजी से मिलेंगी। डीपसीक इसकी सबसे ताजा मिसाल है कि तकनीक के क्षेत्र में किसी एक देश, इलाके या कंपनी का एकछत्र साम्राज्य या एकाधिकार कितनी तेजी से ध्वस्त हो सकता है। इससे भरोसा जगा है कि अगर कोई गरीब या विकासशील मुल्क मामूली संसाधनों के बल पर विकसित देशों के बराबर पहुंचना चाहे, तो दृढ़ इच्छाशक्ति और मेहनत के बल पर आज वह ऐसा आसानी से कर सकता है।

याद कीजिए, जब 1980 के दशक के आखिर में अमेरिका ने भारत को क्रे नामक सुपर कम्प्यूटर देने से इनकार कर दिया था। वह आशंकित था कि भारत इसका इस्तेमाल अपने परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम में कर सकता है। कालांतर में भारत के सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस्ड कंप्यूटिंग (सी—डैक) ने परम—8000 नामक सुपर कंप्यूटर बना लिया। दिखा दिया कि तकनीकी क्रांति में किसी की बपौती नहीं चल सकती। आज वही हालात आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के मामले में बन गए हैं। चीन एआई में बराबरी में आने के बारे में भी न सोच सके, इसका प्रबंध बाइडेन सरकार ने डच कंपनी द्वारा बनाई जाने वाली लिथोग्राफी मशीनों की चीन को बिक्री पर रोक लगाने के रूप में किया था। ये मशीनें बेहद एडवांस माइक्रोचिप्स बना सकती हैं। इनका इस्तेमाल एआई के टूल्स और सॉफ्टवेयर में होता है। हालांकि, डीपसीक के निर्माता अमेरिकी कंपनी एनवीडिया से खास किस्म के माइक्रोचिप्स (ए—100 और एच—800) पहले ही खरीद चुके थे, लिहाजा उनका अत्यधिक किफायत से इस्तेमाल कर चौटबॉट डीपसीक बना डाला गया।

कहां तो अमेरिका इस कोशिश में था कि चीन एआई के मामले में उसका पिछलग्गू बना रहे, लेकिन लागत और तेजी में डीपसीक उससे आगे निकल गया। डीपसीक आर—1 के आर्थिक फायदे—नुकसान की एक तस्वीर तो दुनिया देख ही चुकी है। जैसे ही अमेरिका में डीपसीक के पहुंचने की खबरें आईं, उसके शेयर बाजारों में तबाही का आलम पैदा हो गया। इसकी वजह एआई के क्षेत्र में अमेरिकी कंपनियों के दबदबे को चुनौती मिलना है। डीपसीक आर—1 चूंकि एक मुफ्त (ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर) एआई टूल या कहें कि चौटबॉट है, जिसे बनाने में अमेरिका की महंगी तकनीक और माइक्रो चिप्स की बजाय उनके सस्ते संस्करण इस्तेमाल किए गए हैं, लिहाजा माना गया कि तकनीक के आविष्कार और उसे आजमाने की जो लागत और कीमत अमेरिकी कंपनियां बताती रही हैं, वे बढ़ा—चढ़ाकर बताई गई हैं।

मिसाल के तौर पर अमेरिकी कंपनी ओपन एआई ने चौटजीपीटी को जिस लागत में बनाया था, डीपसीक के निर्माण की लागत उससे दस गुना कम (60 लाख डॉलर यानी करीब 52 करोड़ रुपये) आई है। इस चीनी कंपनी ने साबित कर दिया कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता वाले वही काम बेहद सस्ते में और कई मामलों में मुफ्त में हो सकते हैं जिनके लिए अमेरिकी कंपनियां दसियों गुना ज्यादा पैसा ले रही हैं। हालांकि, कुछ का कहना है कि यह दावा करना कि एआई का कोई बेहद शानदार प्रबंधन बहुत कम पैसे में हो गया है— एक भू—रणनीतिक योजना का हिस्सा हो सकता है। ऐसा कहने के पीछे अमेरिका के खिलाफ आर्थिक युद्ध छेड़ने की मंशा काम कर रही होगी।

दरअसल, कृत्रिम रूप से कम लागत का दावा करने का अर्थ यह साबित करना है कि अमेरिकी कंपनियां छद्म रूप से लागत और कीमतें कई गुना बढ़ाकर बताती हैं। लेकिन यदि वही काम दस—बीस गुना कम कीमत में हो सकता है, तो प्रतिस्पर्धा में आने वाली कंपनी या तो अपने उत्पाद की कीमत उसकी बराबरी में लाने को मजबूर हो जाएगी या फिर घाटा उठाने अथवा कामकाज बंद करने को मजबूर हो जाएगी। लेकिन क्या मुफ्त होने के साथ—साथ डीपसीक आर—1 चौटजीपीटी या गूगल के जेमनाई की तरह ही सक्षम है और उनकी बराबरी कर सकता है।

अभी दो चीजों को लेकर डीपसीक की घेराबंदी शुरू हो गई है। पहली चीज है पूर्वाग्रह—प्रेरित जवाब देना या जवाब देने से इनकार कर देना। जैसे, जब डीपसीक पर सवाल पूछा गया कि चार जून, 1989 को तियानमेन चौराहे पर ट टैंकमैन नामक मशहूर घटना का विवरण क्या है, तो डीपसीक जवाब देने से कन्नी काट गया। सवाल दोहराते रहने पर भी यही जवाब मिला कि वह तो एक एआई असिस्टेंट है, जिसे कोई नुकसान पहुंचाने वाले जवाबों से परहेज बरतने के लिए डिजाइन किया गया है। दूसरा एतराज डीपसीक को लेकर यह है कि ऐसे आप इस पर पंजीकरण (साइन—अप) करते हैं, तो यह आपकी सारी निजी जानकारियां चीन तक पहुंचा देगा। भारत में चीन के सोशल मीडिया एप— टिकटॉक पर प्रतिबंध लगाने और अमेरिका में चीनी कंपनी हुवावे का कारोबार रोकने के पीछे यही तर्क दिया जाता रहा है कि ये चीनी उपकरण और स्मार्ट मशीनें जासूसी करती हैं।

पानी में जहर की राजनीति

—डॉ.वेदप्रकाश—

दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल आरोपजीवी राजनेता हैं। शायद ही कोई दिन ऐसा जाता होगा जब वे स्वयं अथवा उनकी पार्टी के बड़े नेता प्रेस कांफ्रेंस न करते हों। उनके पास दूसरों पर आरोपों की एक लंबी सूची है। सर्वविदित है कि राजनीति में अरविंद केजरीवाल और उनकी पार्टी की पहचान फ्री संस्कृति को बढ़ावा देने वाले, कभी एलजी पर तो कभी केंद्र सरकार पर आरोप लगाने वाले, ख्याली पुलाव बनाने वाले, बड़े—बड़े सपने दिखाने वाले के रूप में रही है।

यह भी सर्वविदित है कि समाजसेवी अन्ना हजारे के संघर्ष का लाभ उठाते हुए आम आदमी पार्टी अस्तित्व में आई। भ्रष्टाचार खत्म करेंगे,साफ सुथरी राजनीति करेंगे, दिल्ली को स्वीटजरलैंड बनाएंगे, दिल्ली की शिक्षा का मॉडल अच्छा बनाएंगे, कूड़े के पहाड़ को खत्म कर देंगे, पूरी दिल्ली को फ्री वाई—फाई देंगे, हर घर में 24 घंटे पानी, यमुना की सफाई और विश्व स्तरीय सड़कें आदि नारों के सहारे वे दिल्ली की राजनीति में जम गए लेकिन राजनीति का अनुभव न होने से और विकास की समुचित दिशा व दृष्टि न होने से दिल्ली में मुफ्त और केवल मुफ्त की संस्कृति से अनेक प्रकार की समस्याएं खड़ी होती चली गई। जनकल्याण के अनेक आवश्यक काम ऐसे ही पड़े रहे। जब कभी उनकी चर्चा भी हुई तो स्वयं अरविंद केजरीवाल दिल्ली के एलजी पर अथवा केंद्र सरकार पर पैसा न देने का आरोप लगाकर पल्ला झाड़ते रहे हैं।

हाल ही में आप संयोजक अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली में जल संकट की स्थिति पर बड़ा आरोप लगाते हुए कहा कि हरियाणा की भाजपा सरकार जान बूझ कर दिल्ली में जहरीला पानी भेज रही है। उन्होंने इसे नरसंहार की साजिश करार दिया है। उन्होंने कहा कि दिल्ली की जनता भाजपा को वोट नहीं दे रही है इसलिए हरियाणा की भाजपा सरकार उन्हें जहर मिला पानी पिलाकर मारना चाहती है। हरियाणा की भाजपा की सरकार ने दिल्ली वालों की पानी की आपूर्ति को बाधित करने के लिए हरियाणा से अपनी फैक्ट्रियों का सारा प्रदूषण डीडी 8 से यमुना नदी में छोड़ना शुरू कर दिया है। इससे

दिल्ली के 30 प्रतिशत लोगों को पीने का पानी नहीं मिलेगा। इस आरोप के जवाब में दिल्ली जल बोर्ड की सीईओ शिल्पा शिंदे ने आप नेताओं के आरोपों को भ्रामक बताया है। साथ ही हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने आज एक बार फिर साबित किया कि घटिया और झूठ की राजनीति करने के मामले में उनका कोई सानी नहीं है। उन्होंने हरियाणा पर जो बेबुनियाद, शर्मनाक, मनगढ़ंत और झूठे आरोप लगाए हैं, उनको लेकर हम चुनाव आयोग को शिकायत करेंगे और मानहानि का मामला दर्ज करेंगे।

आरोप— प्रत्यारोपों का सिलसिला जारी है। चुनाव आयोग ने भी अरविंद केजरीवाल से यमुना के पानी में जहर घोलने का आरोप प्रमाणित करने को कहा है। ध्यातव्य है कि यमुना लंबे समय से प्रदूषण की शिकार है। दिल्ली में वह दम तोड़ रही है। दिल्ली में यमुना के बहाव क्षेत्र में जैव संपदा पूरी तरह ध्वस्त हो चुकी है। कई बड़े नालों के अतिरिक्त यमुना के बहाव क्षेत्र में छोटे—बड़े कई दर्जन नाले प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सीधे गिर रहे हैं। सीवेज ट्रीटमेंट के नाम पर आईटीओ, ओखला और कौंडली आदि में जो संयंत्र लगे हैं वह आधे अधूरे हैं। दिल्ली की अनेक औद्योगिक इकाइयों का कचरा सीधे यमुना में जा रहा है। यमुना एक्शन प्लान के अंतर्गत यमुना की प्रदूषण मुक्ति हेतु जो योजनाएं बननी चाहिए थी, वे नहीं बन पाई हैं। यमुना जल में ऑक्सीजन की कमी और अनेक प्रदूषकों के साथ—साथ अमोनिया की बढ़ोतरी पिछले लंबे समय से जारी है। यमुना से गाद निकालने का मामला और यमुना से जुड़े नालों की सफाई का मामला एवं सीवरेज शोधन संयंत्रों के लगाने का मामला भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ चुका है। दिल्ली में लगभग 35 स्थानों पर सीवरेज शोधन संयंत्र लगने थे लेकिन भ्रष्टाचार के कारण वह प्रक्रिया न हो सकी।

यह भी ध्यान रहे कि न तो यमुना में प्रदूषण का मामला नया है और न ही यमुना जल में अमोनिया की मात्रा बढ़ने का। चुनाव के समय यमुना की सफाई, कूड़े के पहाड़ों को खत्म करना जैसे अनेक चुनावी वादे जोर पकड़ते हैं और फिर धरातल पर कुछ काम नहीं होता है। दिल्ली में अरविंद केजरीवाल, मनीष सिसोदिया और सत्येंद्र जैन सहित कई बड़े नेता घोटालों के आरोप में लंबी सजा जेल काटने के बाद जमानत पर बाहर हैं। क्या दिल्ली की बदहाली के लिए ये सीधे जिम्मेदार नहीं है? ये दिल्ली की कितनी भलाई कर रहे हैं और आगे कितनी करेंगे, यह भी विचारणीय है लेकिन यमुना के पानी में जहर मिलाकर नरसंहार का आरोप अरविंद केजरीवाल की बौखलाहट, इस बार चुनाव में हार के भय और मानसिक दिवालियापन को प्रमाणित करता है। चुनाव आयोग उनके इस आरोप पर गंभीर है। आयोग ने इस संबंध में केजरीवाल से पुनरु पांच सवालों के जवाब देने को कहा है। यह भी चिंताजनक है कि विगत लंबे समय से जाति, संप्रदाय, क्षेत्रीयता, भाषा, संविधान, किसान, युवा ,महिलाएं ,बेरोजगारी आदि अनेक मुद्दों पर समूचा विपक्ष निहित स्वार्थों की पूर्ति हेतु समाज में जहर घोलने का प्रयास कर रहा है। भिन्न—भिन्न रूपों में भ्रम और भय फैलाकर आपसी सद्भाव भंग करने के प्रयास सामान्य होते जा रहे हैं। दिल्ली में अब केवल गर्मी में ही नहीं अपितु सर्दियों में भी जल संकट सामान्य होता जा रहा है। दिल्ली की जनसंख्या लगातार बढ़ रही है। यहां जनसंख्या के अनुपात में शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास और मूलभूत सुविधाएं कम पड़ रही हैं और उन्हें समुचित रूप में व्यवस्थित करने के कोई प्रयास भी फिलहाल तो नजर नहीं आ रहे हैं। पानी के माध्यम से लोगों के मन—मस्तिष्क में जहर घोलने की राजनीति घातक है।

धारदार औजार से युवक की नृशंस हत्या

संवाददाता–श्रावस्ती। गुरुवार की रात एक युवक की धारदार हथियार से नृशंस हत्या कर दी गई। सुबह युवक की लाश गांव के बाहर बाग से बरामद हुई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने पंचनामा कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। वहीं परिजनों ने नामजद तहरीर देकर आठ लोगों पर हत्या का आरोप लगाया।

हरदत्त नगर गिरंट थाना क्षेत्र ग्राम पंचायत फुलवरिया शाहपुर के मजरा भेसड़ी निवासी राजा बाबू (30) पुत्र तेजराम की रक्त रंजिश लाश शुक्रवार सुबह भेसड़ी गांव के बाहर स्थित बाग में पाई गई। युवक जमुनहा बहराइच मार्ग पर भेसड़ी नहर पुल के पास होटल चलाता था। गुरवार सुबह वह घर से दुकान पर गया था। शाम को वह एक मित्र की बाइक लेकर खाना खाने के लिए होटल से घर के लिए निकला था। लेकिन घर नहीं पहुंचा। घर के लोग पता लगाने के लिए होटल पर पहुंचे तो होटल बंद मिला और राजा बाबू वहां नहीं था। परिजन युवक की तलाश करने लगे लेकिन वह नहीं मिला। शुक्रवार सुबह करीब सात बजे गांव के ही इदरीश ने परिजनों को सूचना दी कि राजाबाबू की लाश समय प्रसाद की बाग में पड़ी है। सूचना पर परिजन बाग में पहुंचे और शव देख उनमें चीख पुकार मच गई। सूचना पुलिस को दी गई। गिरंट थानाध्यक्ष शैलकांत उपाध्याय पुलिस व फोरेंसिक टीम के साथ घटनास्थल पर पहुंचे। फोरेंसिक टीम ने मौके पर जांच पड़ताल कर साक्ष्य संकलित किया। साथ ही पंचनामा कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। घटना की जानकारी होने पर एसपी घनश्याम चौरसिया, सीओ संतोष कुमार ने भी घटनास्थल पर पहुंच कर मौका मुआयना किया।

घनश्याम चौरसिया, पुलिस अधीक्षक ने कहा कि भेसड़ी गांव के पास बाग में युवक की लाश मिली है। मौका मुआयना किया गया तो मुंह पर, शरीर पर कई जगह चोटें हैं। प्रथम दृष्टया धारदार हथियार से हत्या करना प्रतीत होता है। शव को पीएम की कार्रवाई के लिए भेज दिया गया है। घर वालों को आठ लोगों पर शक है कि जमीनी विवाद में मेरे बेटे को मार दिया है। परिजनों ने तहरीर दिया है। मामला दर्ज कर कार्रवाई की जा रही है।

जुमे की नमाज को लेकर सतर्क रही पुलिस

संवाददाता–श्रावस्ती। जुमे की नमाज को लेकर पुलिस पूरी तरह चौकस दिखी। शहर के विभिन्न संवेदनशील इलाको में पुलिस बलो की तैनाती की गई थी। वहीं पुलिस अधिकारी भ्रमणशील रहकर सुरक्षा देखते रहे। पुलिस अधीक्षक घनश्याम चौरसिया के निर्देश पर शुक्रवार को जुम्मे की नमाज को शांतिपूर्ण व सुरक्षित तरीके से संपन्न कराने के लिए पुलिस की ओर से व्यापक सुरक्षा व्यवस्था की गई। प्रमुख मस्जिदों, दरगाहों व संवेदनशील स्थलों पर सुरक्षा के लिए पर्याप्त पुलिस बल की तैनाती की गई। थाना प्रभारियों, सर्किल अधिकारियों व अन्य वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने पुलिस बल के साथ पैदल गश्त कर स्थिति का जायजा लिया। इकौना में एसडीएम व सीओ ने पैदल गश्त करके सुरक्षा का एहसास कराया।

शिक्षकों ने वित्त लेखाधिकारी को सौंपा ज्ञापन

संवाददाता–गोण्डा। शहर के रानीपुरवा में कंपोजिट विद्यालय परिसर में संचालित वित्त एवं लेखाधिकारी कार्यालय पर शुक्रवार को उप्र जूनियर हाईस्कूल शिक्षक संघ के पदाधिकारियों ने विभिन्न समस्याओं को लेकर वित्त एवं लेखाधिकारी बेसिक सिद्धार्थ दीक्षित को ज्ञापन सौंपा है। प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई मंडल अध्यक्ष पवन सिंह और जिला अध्यक्ष किरन सिंह ने किया। संघ के पदाधिकारियों ने कहा कि सभी शिक्षकों के जीपीएफ खाते का बैलेंस आगणित करके ऑनलाइन फीड किया जाए। एनपीएस कटौती को विलंब से सीआरए सिस्टम पर ब्याज के साथ पोस्ट करने, एनपीएस के एरियर के सरकारी अंशदान पर जीपीएफ की ब्याज दर से जोड़ कर भुगतान करने, 31 मार्च 2014 के बाद नियुक्त शिक्षकों के जीआईएस कटौती को शिक्षकों को अविलम्ब वापस करने की मांग उठाई। साथ ही चयन वेतनमान आदेश कार्यालय को प्राप्त होते ही वेतन में जोड़कर भुगतान करने तथा फिक्सेशन पूर्ण करने, शिक्षकों के अवशेष देयक का तत्काल भुगतान करने, शिक्षकों की वार्षिक लेखा पर्ची वितरण करने सहित अन्य समस्याओं के निस्तारण की मांग की है।

इस अवसर पर प्रांतीय सदस्य अनिल कुमार सिंह, मण्डल उपाध्यक्ष राधे श्याम गुप्ता, मोहित प्रकाश सिंह, सुधाकर सिंह, बृजेश कुमार, तिलक राम वर्मा, प्रहलाद पांडेय, नंद कुमार सिंह, कीर्ति वर्धन सिंह, चन्द्र प्रकाश सिंह, रामजी वर्मा, वीर सिंह, अनुज कुमार, धनंजय सिंह, ऋतुराज यादव सहित अन्य मौजूद रहे।

महाकुंभ से स्नान कर लौट रहे श्रद्धालुओं के पिकअप को ट्रक ने मारी ठोकर, सात गंभीर

संवाददाता–देवरिया। जिले के सदर कोतवाली क्षेत्र के सोनूघाट के समीप प्रयागराज से संगम स्नान कर लौट रहे श्रद्धालुओं के पिकअप में शुक्रवार की सुबह ट्रक ने ठोकर मार दिया। जिससे पिकअप पलट गया और उसमें सवार दो दर्जन से अधिक लोग घायल हो गए। घायलों में गंभीर सात को उपचार के लिए महर्षि देवरहा बाबा मेडिकल कालेज पहुंचाया गया, जहां से प्राथमिक उपचार के बाद एक की हालत गंभीर देख बीआरडी मेडिकल कालेज गोरखपुर रेफर कर दिया गया है। उधर हादसे की सूचना मिलते ही डीएम दिव्या मित्तल मेडिकल कालेज पहुंच कर घायलों का हाल जानी। साथ ही सीएमओ डा.राजेश झां व सीएमएस डा.एचके मिश्रा को आवश्यक निर्देश दिया।

कुशीनगर जनपद के कसया थाना क्षेत्र के ग्राम सिसई, कुरमौटा, विशुनपुरा समेत विभिन्न गांवों के लोग मौनी अमावस्या पर संगम स्नान करने के लिए प्रयागराज गए थे। स्नान करने के बाद पिकअप से ही अपने गांव लौट रहे थे, अभी वह सदर कोतवाली के सोनूघाट के समीप पहुंचे थे कि अचानक ट्रक ने ठोकर मार दिया। जिससे पिकअप पलट गया और उसमें सवार लोग घायल हो गए। आसपास के लोगों ने उन्हें पिकअप से बाहर निकाला और मेडिकल कालेज पहुंचाया। घायलों में शाहपुर कुरमौटा निवासी राधेश्याम, सीमा देवी पत्नी राधेश्याम, कुंती देवी पत्नी चंद्रदेव, लक्ष्मीना पत्नी जोगिंदर, विशुनपुरा निवासी ऊषा देवी पत्नी सत्येंद्र, कुरमौटा निवासी चंदा देवी पत्नी मोतीलाल, सिसई निवासी पार्वती देवी को भर्ती कराया गया है। जिसमें से सीमा देवी की हालत गंभीर देख चिकित्सक ने बीआरडी मेडिकल कालेज रेफर कर दिया। कुंभ से लौट रहे श्रद्धालुओं के वाहन के दुर्घटनाग्रस्त होने व बड़ी संख्या में लोगों के घायल होने की सूचना मिलते ही सीओ सिटी संजय कुमार रेड्डी, कोतवाल दिलीप सिंह पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंच गए। सभी घायलों को अस्पताल भिजवाया। जबकि डीएम दिव्या मित्तल एसपी विक्रांत वीर के साथ मेडिकल कॉलेज पहुंची और सभी घायलों से मुलाकात कर उनका हाल जाना। अधिकारियों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं देने का निर्देश दिया।

विद्यार्थी जीवन मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण काल –डॉ. शैलेन्द्र

संवाददाता–महराजगंज। पंडित दीन दयाल इंटर कालेज में चल रहे सात दिवसीय एनएसएस शिविर का समापन हो गया। इस दौरान प्रधानाचार्य डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए जीवन की आधारशिला है। विद्यार्थी जीवन मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण काल माना जाता है। हमारे भविष्य के सपने, इच्छाएं और आशाएं इस पर निर्भर हैं। यह काल व्यक्ति को भविष्य में आने वाली चुनौतियों और अवसरों के लिए तैयार करता है। उन्होंने कहा कि एक श्रेष्ठ नागरिक के रूप में हमारा दायित्व है कि हम स्वयं की कमियों को दूर करते हुए श्रेष्ठता की ओर अग्रसर होकर अपने नैतिक दायित्वों का निर्वहन करें और समाज के उत्थान में अपना योगदान दें। विशिष्ट अतिथि पं. दीनदयाल सेंट्रल पब्लिक स्कूल के प्रधानाध्यापक आनन्द प्रकाश राव ने कहा कि विद्यार्थी देश के भविष्य हैं। देश के प्रत्येक प्रकार का विकास विद्यार्थियों पर ही निर्भर है। विद्यार्थी जाति, समाज और देश का निर्माता होता है। इसलिए विद्यार्थी का चरित्र उत्तम होना बहुत आवश्यक है। उत्तम चरित्र अनुशासन से ही बनता है। प्रवक्ता रमेश सिंह ने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना का एक मात्र उद्देश्य युवा छात्रों को सामुदायिक सेवा के मध्य से व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए अनुभव प्रदान करना है। स्वयंसेवी निहारिका पटेल संजना कन्नौजिया, निरुपमा वर्मा ने सरस्वती वंदना व स्वागत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम अधिकारी जितेन्द्र वर्मा ने शिविर के प्रगति की आख्या प्रस्तुत कर आगंतुकों के प्रति आभार व्यक्त किया। संचालन स्वयंसेवी देवव्रत चौधरी ने किया। इस अवसर पर धीरज साहनी, नीरज गुप्ता, सर्वदानंद, आफताब आलम, दिव्यांशु पटेल, अर्जित चौरसिया, राहुल साहनी, सोनी यादव, जुही, करिश्मा, राधा, सुगंधा चौहान, नव्या जायसवाल आदि मौजूद रहे।

महाकुंभ भगदड़ की शिकार रमावती का शव पहुंचा देवरिया, सांत्वना देने गईं डीएम भी भावुक

संवाददाता–देवरिया। महाकुंभ के भगदड़ में मरी रमावती पत्नी अवधेश का शव गुरुवार की रात उनके पैतृक गांव देवरिया जिले के भटौली पहुंचा। शव पहुंचते ही घर में कोहराम मच गया। डीएम दिव्या मित्तल, एसपी विक्रांत वीर के साथ शुक्रवार सुबह पीड़ित परिवार से मिलने पहुंची पहुंची। महाकुंभ के भगदड़ में मरी रमावती पत्नी अवधेश का शव गुरुवार की रात उनके पैतृक गांव देवरिया जिले के भटौली पहुंचा। शव पहुंचते ही घर में कोहराम मच गया। डीएम दिव्या मित्तल, एसपी विक्रांत वीर के साथ शुक्रवार सुबह पीड़ित परिवार से मिलने पहुंची पहुंची। इस दौरान परिजनों को बिलखता देख वे खुद भी भावुक हो गईं।जिलाधिकारी ने जमीन पर बैठ कर पीड़ित परिवार को ढांढस बधाया। यही नहीं परिवार की बुजुर्ग महिला को अपने हाथों से उन्होंने पानी पिलाई।

गौरीबाजार के भटौली खुर्द के रमावती (50) पत्नी अवधेश यादव की महाकुंभ में हुई भगदड़ में दब कर मौत हो गई थी। गुरुवार देर शाम शव गांव पहुंचने पर जिला प्रशासन ने परिवार को शव को पोस्टमार्टम कराने की सूचना दिया। शुक्रवार सुबह 9.28 बजे डीएम दिव्य मित्तल रमावती के पीड़ित परिवार से मिलने भटौली पहुंची थी। रोते बिलखते परिवार को देर तक समझाती रही। मृतका के पति अवधेश को हर संभव सहयोग का आश्वासन दी।परिवार के एक बुजुर्ग को समझाते हुए जमीन पर बैठ गई। अपने हाथों से उसे पानी पिलाया।

शरीर गरम होने पर चिकित्सक बुलाने को कहा। वहीं मृतका के शरीर पर भगदड़ में लगे चोट के निशान को भी देखा। भगदड़ में दबकर चेहरा लहूलुहान हो चुका था। परिवार के रोती महिलाओं को देख भावुक हो उठी। साथ गए सदर एसडीएम सदर विपिन द्विवेदी, कानूनों राधेश्याम सिंह को कुंभ मेला के भगदड़ में घायल भटौली खुर्द की विंद्रावती पत्नी योगेंद्र यादव, विद्यावती पत्नी नंदलाल, अजोरा देवी पत्नी स्व. ललन, परमिला पत्नी रविंद्र, रविंद्र पुत्र बुझावन को गांव में ही सीएचसी की मेडिकल टीम बुल कर समुचित इलाज कराने की व्यवस्था करने का निर्देश दिया। कुछ ही देर में पहुंची सीएचसी की टीम ने भगदड़ में घायलों के बीच पहुंच इलाज किया और दवाएं दी। महाकुंभ के भगदड़ में मरी गौरीबाजार के भटौली खुर्द के अमरावती का शव गुरुवार को देर शाम गांव पहुंचा। दाहसंस्कार की तैयारी कर रहे परिवार वावों को जिला प्रशासन ने शव को पोस्टमॉर्टम कराने की सूचना दी। पीड़ित परिवार से डीएम से मिलने के बाद पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया।

डीआईजी ने देखी भारत नेपाल सीमा की सुरक्षा

संवाददाता–श्रावस्ती। प्रयागराज में आयोजित महाकुम्भ मेले को लेकर प्रदेश के सभी सीमा पर सुरक्षा बढ़ाई गई है। श्रावस्ती में भी भारत नेपाल की खुली सीमा पर चौकसी बरती जा रही है। एसएसबी के डीआईजी ने देर रात भारत नेपाल सीमा का दौरा कर सुरक्षा का जायजा लिया। उपमहानिरीक्षक क्षेत्रक मुख्यालय एसएसबी लखीमपुर खीरी वी विक्रमण ने गुरुवार रात में भारत नेपाल सीमा क्षेत्र का निरीक्षण कर लिया सीमा क्षेत्र की सुरक्षा का जायजा। उन्होंने 62वीं वाहिनी कमांडेन्ट अमरेन्द्र कुमार वरुण कमान्डेंट के साथ गुरुवार रात व शुक्रवार को भारत–नेपाल सीमा क्षेत्र का दो दिवसीय दौरा किया। इस दौरान उन्होंने सीमा की गतिविधियों, बरती जाने वाली सतर्कता आदि की जांच की। सुरक्षा प्वाइंटों को चेक किया और सुरक्षा को लेकर जवानों को जरूरी निर्देश भी दिए। उन्होंने सीमा चौकियों में पहुंच कर जवानों से कुशलक्षेम जाना व हमेशा सतर्क रहने का निर्देश दिया। इसके साथ ही वाहिनी मुख्यालय भिनगा में अग्रणी सूचना एजेन्सी की बैठक कर जरूरी निर्देश दिए। सीमा निरीक्षण के दौरान उपकमांडेन्ट पीयूष सिंहा, निरीक्षक मनीष चौधरी आदि मौजूद रहे।

जंगली हाथी का तांडव, पांच घरों को कर दिया तहस–नहस, लाखों की सम्पत्ति नष्ट

संवाददाता–बहराइच। जिले में स्थित कतर्नियाघाट वन्यजीव प्रभाग के ट्रांस गेरुआ के जंगल व नेपाल सीमा के करीब बसे भरथापुर गांव में गुरुवार रात को जंगली टस्कर हाथी ने दस्तक दे दी। जिसने फूस के बने तीन कच्चे घरों तहस–नहस कर दिया। हाथी के उतपात के चलते लोगों का काफी नुकसान हो गया है। कतर्नियाघाट रेंज के भरथापुर गांव में पिछले कई दिनों से जंगली हाथियों का उत्पात चल रहा है। गुरुवार की रात दो बजे एक टस्कर हाथी गांव में घुस गया। जिसने गांव के तीन ग्रामीणों के घरों को तहस–नहस कर दिया है। गांव निवासी मिश्रीलाल पुत्र भारत, कलावती पत्नी पुतई व विनोद कुमार पुत्र राधेश्याम के फूस के कच्चे मकान को हाथी ने ढहा दिया। हाथी को भगाने के लिए गांव के लोग एकत्रित हो गए सभी टॉर्च और मशाल की रोशनी के साथ ढोल और थाली बजाते हुए हाका लगाने लगे। इस बीच हाथी ने घरों में रखे गृहस्थी के सामान को तोड़फोड़ दिया और घर में रखे सारे आनाज को बिखेर कर बर्बाद कर दिया। हाथी का उत्पात एक घण्टे तक जारी रहा इस दौरान ग्रामीणों के हांका लगाने के बाद वह जंगल की ओर भागा। बहराइच गांव के सर्वेश कुमार ने बताया कि दो दिन पूर्व हाथी ने गांव निवासी वीरेंद्र व दिनेश के घर की कच्ची दीवार को ढहा दिया था जिसकी सूचना लोगों ने वन विभाग को दी थी। सुबह ग्रामीणों की सूचना पर मौके पर पहुचे वन रक्षक योगेश सिंह ने घटना की जांच करते हुए नुकसान का आकलन किया और रिपोर्ट रेंज कार्यलय समेत उच्चाधिकारियों को भेजी है।

आठ सौ मीटर लंबे झंडे और आकर्षक झांकियों के साथ सिसवा में निकली तिरंगा यात्रा

संवाददाता–महराजगंज। सिसवा में साढ़े तीन कुंतल समोसे का रिकॉर्ड बनाने वाले सिसवा युवा संगठन के बैनर तले आकर्षक झांकियों के साथ आठ सौ मीटर लंबी तिरंगा यात्रा निकाली गई। इस दौरान समूचा कस्बा वंदे मातरम के जयघोष से गूंजता रहा। लोगों ने पुष्पवर्षा कर तिरंगा यात्रा का स्वागत किया। केन यूनियन कार्यालय परिसर में नपा अध्यक्ष प्रतिनिधि गिरिजेश जायसवाल, आरपीआईसी स्कूल के निदेशक डॉ. पंकज तिवारी, सेंट जोसेफ्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल के निदेशक ओए जोसफ व स्टर्लिंग पब्लिक स्कूल के प्रबंधक एन बी पाल ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। संगठन के नवीन तिवारी व रितेश सोनी ने मां भारती के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की। बच्चों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के बाद आठ सौ मीटर लंबे तिरंगा झंडा को आरपीआइसी स्कूल, सेंट जोसेफ्स स्कूल, प्रेमलाल सिंहानिया कन्या इंटर कालेज, किसान आदर्श इंटर कालेज बेलवा, रामकिशन मेमोरियल स्कूल, स्टर्लिंग पब्लिक स्कूल, केडीएस इंटरनेशनल स्कूल, लिटिल स्टार एकेडमी, जेपी पब्लिक स्कूल, आइडियल एसएस पब्लिक स्कूल, एनटी पब्लिक स्कूल सहित दर्जनों स्कूलों के बच्चों के साथ युवाओं की टीम ने लेकर तिरंगा यात्रा प्रारंभ किया। यह यात्रा नगर के अमरपुरवा, श्रीरामजानकी मंदिर रोड, इस्टेट चौक, सब्जी मंडी, प्रेमचित्र मंदिर रोड, सायर देवी स्थान रोड, फलमंडी, श्रीश्याम मंदिर, रेलवे स्टेशन रोड होते हुए नगर भ्रमण के बाद गोपाल नगर तिराहे पर पहुंचकर समाप्त हुआ। यात्रा के दौरान राष्ट्र प्रेम की भावना से ओत प्रोत देश–भक्ति गीत व लघु एकांकी लोगों को आकर्षित कर रहे थे। यात्रा में जगह–जगह लोग अभिनंदन करते हुए तिरंगे को सलामी दे रहे थे। यात्रा में देवेंद्र शुक्ला, विवेक चौरसिया, जितेंद्र सोनी, संजय सिंह, राकेश शर्मा, संतोष कुमार सहित बड़ी संख्या में लोग शामिल रहे।

विद्यार्थियों को क्षय उन्मूलन के संबंध में किया जागरूक

संवाददाता–गोण्डा। शहर में एलबीएस पीजी कॉलेज के ललिता सभागार में शुक्रवार को क्षय उन्मूलन अभियान के तहत जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिला अस्पताल के डीपीसी डॉ. विवेक शरण के संयोजन में आयोजित कार्यक्रम में जिला समन्वयक संजय त्रिपाठी ने टीबी मुक्त भारत अभियान के बारे में जानकारी दी। उन्होंने क्षय रोग के लक्षण, जांच एवं उपचार की जानकारी प्रदान की। जिला समन्यवयक ने कहा कि क्षय रोग हवा में फैलता है। एक क्षय रोगी 15–20 लोगों को संक्रमित कर सकता है। सरकार का प्रयास है कि रोगियों की पहचान करके उनका उचित उपचार हो ताकि पूरे देश को क्षय रोग से मुक्त किया जा सके। प्रशान्त कुमार श्रीवास्तव ने क्षय रोग की उत्पत्ति एवं चार मुख्य लक्षणों– कफ, बुखार, रात में पसीना आना तथा वनज में कमी होना के विषय में बताया। इस दौरान कॉलेज प्राचार्य प्रो. रविंद्र कुमार पांडे, प्रो. जितेन्द्र सिंह, प्रो. आरबी सिंह बघेल, प्रो. संदीप श्रीवास्तव, डॉ. पुष्यमित्र, डॉ. पूजा यादव, डॉ. विनय पांडे, डॉ. रवि ओझा, डॉ. अमित कुमार शुक्ला, संजय तिवारी जिला समन्वयक टीबी प्रशान्त कुमार सहित अन्य मौजूद रहे। अंत में प्रो. अभय कुमार श्रीवास्तव ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

सेवानिवृत्त उपनिरीक्षकों को दी गई विदाई

संवाददाता–श्रावस्ती। पुलिस कार्यालय में अपर पुलिस अधीक्षक प्रवीण कुमार यादव की ओर से उपनिरीक्षक प्रेम शंकर सिंह व राजनाथ के सेवानिवृत्त होने पर शुक्रवार को विदाई समारोह का आयोजन किया गया। एएसपी ने सेवानिवृत्त उपनिरीक्षकों के समर्पण और अनुकरणीय सेवाओं की सराहना की। उन्होंने कहा कि आप सभी ने अपने कार्यकाल में जो कर्तव्यनिष्ठा और अनुशासन का परिचय दिया है, वह प्रेरणादायक है। पुलिस विभाग को आपके योगदान पर गर्व है। उन्होंने सेवानिवृत्त उपनिरीक्षकों को स्मृति चिह्न प्रदान कर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। इस मौके पर प्रतिसार निरीक्षक अखिलेश कुमार आदि मौजूद रहे।

जिले में स्पर्श कुष्ठ जागरूकता अभियान शुरू

संवाददाता–महराजगंज। कुष्ठ का उपचार ले चुके या उपचाराधीन कुष्ठ रोगियों से संक्रमण का कोई खतरा नहीं है। समाज को खतरा उन रोगियों से है जो लक्षण के बावजूद भय, भ्रांति, कलंक और भेदभाव के कारण कुष्ठ की जांच नहीं करा पाते हैं। इस संदेश के साथ जिले में संकल्प लिया गया। साथ ही साथ 14 दिनों तक चलने वाला स्पर्श कुष्ठ जागरूकता अभियान भी शुरू हुआ। जागरूकता के लिए सीएमओ डॉ. श्रीकांत शुक्ला ने जागरूकता वाहन को रवाना किया। सदर सीएचसी परिसर में आयोजित कार्यक्रम में सीएमओ ने उपस्थित लोगों को कुष्ठ निवारण की शपथ दिलाई। साथ ही डीएम का संदेश भी सभी लोगों को पढ़ कर सुनाया गया। सीएमओ ने कहा कि कुष्ठ जागरूकता अभियान के तहत 30 जनवरी से 13 फरवरी तक (14 दिनों) स्कूल, कॉलेज, ग्राम सभा, स्वास्थ्य और पोषण से जुड़े सत्र स्थलों और विभिन्न सामुदायिक प्लेटफार्म के जरिये लोगों को बीमारी के लक्षणों और उपचार के बारे में जानकारी दी जाएगी। सभी को बताया जाएगा कि कुष्ठ के लक्षण दिखने पर आशा, एएनएम या बहुद्देशीय स्वास्थ्य कार्यकर्ता की मदद से स्वास्थ्य केंद्र पर जांच कराएं और सम्पूर्ण इलाज पाएं। कार्यक्रम में कुष्ठ रोगियों के बीच कंबल भी वितरित किया गया। जिला कुष्ठ अधिकारी डॉ. एनएन प्रसाद ने बताया कि पासी बेसिलाई (पीबी) कुष्ठ रोग का इलाज छह माह में और मल्टी बेसिलाई (एमबी) कुष्ठ रोग का इलाज साल भर में पूरा हो जाता है। डिप्टी सीएमओ डॉ. केपी सिंह ने बताया कि समय से जांच और इलाज न करवाने पर यह बीमारी दिव्यांगता और विकृति का रूप ले सकती है। कुष्ठ अधिक संक्रामक बीमारी नहीं है और यह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक आसानी से नहीं पहुंचता है। एक बार उपचार शुरू होने के बाद संक्रमण की आशंका शून्य हो जाती है। इसका उपचार सभी ब्लॉक स्तरीय अस्पतालों पर उपलब्ध है। कार्यक्रम में सदर सीएचसी के अधीक्षक डॉ. उमेश चंद्रा, डीपीएम नीरज सिंह, स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी श्रीभागवत सिंह, एके बर्नवाल, राम सुग्रीव वर्मा, धर्मेन्द्र गुप्ता आदि मौजूद रहे।

शिक्षक ले रहे डिजिटल साक्षरता का प्रशिक्षण

संवाददाता–गोण्डा। डायट दर्जीकुआं पर चल रहे पांच दिवसीय डिजिटल साक्षरता के प्रशिक्षण में संदर्भदाताओं ने शिक्षकों को आधुनिक तकनीक के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा के बारे में विस्तार से समझाया। प्राचार्य राम सागर पति त्रिपाठी के निर्देशन में हो रहे इस प्रशिक्षण के प्रभारी विज्ञान प्रवक्ता मोहम्मद शरीफ है। संदर्भदाता वंदना त्रिपाठी, राखाराम गुप्ता, ऋतुराज यादव ने शिक्षकों को विज्ञान और तकनीकी शिक्षा को जोड़ते हुए नेटवर्किंग, जीमेल, इंटरनेट, एमएस पेंट व एमएस वर्ड के बारे में समझाया। प्रशिक्षण प्रभारी मोहम्मद शरीफ ने बताया कि वजीरगंज, मुजेहना और पंडरी कृपाल के पूर्व माध्यमिक व कम्पोजिट विद्यालयों के विज्ञान शिक्षकों को इस बैच में प्रशिक्षित किया जा रहा है। दूसरे ब्लाक के विज्ञान शिक्षकों को भी प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस मौके पर सुशील कुमार मिश्र, आनन्द देव सिंह, दयाशंकर प्रजापति, नरेन्द्र कौशल, नूर मोहम्मद, राजेश तिवारी, सरवर अली, आरती उपाध्याय, प्रेमलता पाण्डेय, माला सिंह, मंजू सिंह रहीं।

जिला परिषद का अधिकारी बता कर रहे थे वसूली, हुआ विरोध तो रकम लौटाकर हुए फरार

संवाददाता–देवरिया। देवरिया जिले के भटनी थाना क्षेत्र में बिहार सीमा से सटे बलुआ अफगान गांव के मुलायम चौराहे पर दुकानदारों ने अवैध वसूली करने का आरोप लगाया है। दुकानदारों ने खुद को अधिकारी बता वसूली कर रहे आरोपियों का वीडियो भी वायरल किया है। वीडियो वायरल होने के बाद स्थानीय पुलिस मामले की जांच में जुटी है। वहीं दुकानदारों के वीडियो बनाते ही वसूले गए रकम को लौटाते हुए रसीद लेकर आरोपी बैरंग वापस लौट गए। वीडियो जारी होने के बाद आस पास के प्रमुख चौराहों पर भी आरोपियों के वसूली करने की जानकारी हुई है। बलुआ अफगान गांव के मुलायम चौराहे पर रेडिमेड वस्त्रालय, साईकिल, मिठाई स्टोर, मेडिकल आदि की दुकाने हैं। दुकानदारों के अनुसार एक चारपहिया वाहन से दो लोग उतरे तथा खुद को जिला परिषद देवरिया से आने की जानकारी दी। दुकानदारों से जिला परिषद का लाईसेंट मांगने लगे। दुकानदारों के पास लाईसेंस न होने पर अलग अलग रकम की रसीद काटने लगे। साईकिल रिपेयर की दुकान चलाने वाले संजय कुमार ने बताया कि दुकान पर दो व्यक्तियों ने एक हजार बीस रुपए की रसीद काटने लगे। वहीं रेडिमेड कपड़ा व्यवसायी शहाबुद्दीन ने बताया कि एक हजार सात सौ की रसीद काटी गयी। वसूली कर रहे दोनों आरोपियों से उनकी पहचान कार्ड आदि मांग करने पर दोनों दुकानदारों की रकम लौटाकर भागने लगे ।इस दौरान ग्रामीणों ने उनके वीडियो भी बनाकर वायरल कर दिया। वीडियो वायरल होने के बाद आस पास के प्रमुख चौराहे खोरीबारी, घांटी बजार आदि स्थानों पर भी इन आरोपियों की ओर से वसूली किए जाने की जानकारी हुई। इस दौरान राहुल, संजय कुमार सहित दर्जनभर से अधिक दुकानदारों से वसूली की जानकारी हुई है। समाजसेवी डॉ सत्यनारायण शर्मा ने मामले की शिकायत जिलापरिषद के अधिकारियों से शिकायत करते हुए ऐसे कर्मियों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग रखी है।

चौपाल लगाकर सुने जनता की समस्याएं–एसपी

संवाददाता–श्रावस्ती। एसपी ने थाने का वार्षिक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने प्रभारी निरीक्षक से अपराध और अपराधियों पर की गई कार्रवाई के संबंध में जानकारी ली। साथ ही एसपी ने अपराध रजिस्टर को चेक किया और अभिलेखों का रखरखाव भी देखा। पुलिस अधीक्षक घनश्याम चौरसिया ने शुक्रवार को थाना हरदत्तनगर गिरंट का वार्षिक निरीक्षण किया। सबसे पहले थाने पहले एसपी को सम्मान गार्द की ओर से सलामी दी गई। एसपी ने थाना कार्यालय में रजिस्टर नंबर आठ, अपराध रजिस्टर, एक्टिव लिस्ट, बीट सूचना रजिस्टर, फ्लाई शीट रजिस्टर, बीपीओ रजिस्टर, शस्त्र सत्यापन, आर्डर बुक प्रार्थना पत्र, आर्डर बुक न्यायालय आदि का बारीकी से अवलोकन किया।

दोहरे हत्याकांड के दोषी दो भाइयों को उम्रकैद की सजा

संवाददाता–श्रावस्ती। दोहरे हत्याकांड मामले के दो आरोपी भाइयों को न्यायालय ने दोषी करार दिया। साथ ही दोनों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई। इसके साथ ही दोनों को 25–25 हजार रुपये के अर्थदंड से भी दंडित किया। सोनवा क्षेत्र के इटरौरी गांव में 10 वर्ष पूर्व हुए दोहरे हत्याकांड मामले के दो सगे भाइयो को न्यायालय की ओर से उम्रकैद की सजा दी गई। जिला शासकीय अधिवक्ता (फौजदारी) केपी सिंह ने बताया कि सोनवा क्षेत्र के इटरौरी गांव निवासी दो सगे भाइयों गंगाराम व रक्षा राम आठ सितम्बर 2014 की रात घर के बाहर सो रहे थे। इस दौरान इसी गांव के निवासी सगे भाई मनोहर लाल उर्फ इंस्पेक्टर व राम अनुज आए और रक्षाराम को मारपीट कर कुएं में फेंक दिया गया था। गंगाराम को भी मारपीट कर चोट पहुंचाई थी। बाद में रक्षाराम का शव कुएं से बरामद हुआ व 10 सितम्बर को गंगाराम की लखनऊ में इलाज के दौरान मौत हो गई। मृतकों की मां शिवकला की तहरीर पर पुलिस ने मुकद्मा दर्ज किया और विवेचना कर आरोप पत्र न्यायालय में दाखिल किया। 10 सालों से न्यायालय में मामले का विचारण चल रहा था। शुक्रवार को सुनवाई के दौरान जिला एवं सत्र न्यायाधीश राम मिलन सिंह ने आरोपी भाइयों को दोषी करार देते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनाई। साथ ही 25–25 हजार रुपये का अर्थदंड लगाया। उन्होंने बताया कि अर्थदंड अदा न करने पर दोषियों को पांच महीने का अतिरिक्त कारावास और भुगतना होगा।

सपा के बागी विधायक ने भाजपा के लिए किया प्रचार

संवाददाता—अयोध्या। मिल्कीपुर सीट पर होने जा रहा उपचुनाव दोनों प्रमुख पार्टियों भाजपा और सपा के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया है। भाजपा ने प्रदेश सरकार के सात मंत्री समेत 40 विधायकों को चुनाव मैदान में उतार रखा है तो समाजवादी पार्टी ने भी अपने 40 स्टार प्रचारकों को मिल्कीपुर के चुनाव मैदान में उतार दिया है। वहीं, दूसरी तरफ मिल्कीपुर में सपा को एक झटका भी लग रहा है। समाजवादी पार्टी से गोसाईगंज के बागी विधायक अभय सिंह भाजपा के पक्ष में प्रचार कर रहे हैं। मिल्कीपुर क्षेत्र में पहुंचे सपा के बागी विधायक अभय सिंह ने भाजपा प्रत्याशी चंद्रभानु पासवान के पक्ष में प्रचार किया और कहा कि मिल्कीपुर सीट से भाजपा की जीत सुनिश्चित है। अभय सिंह ने कहा कि इस क्षेत्र में हमारे बहुत से रिश्तेदार हैं, उनको भाजपा के पक्ष में करने के लिए हम लोग लगातार प्रचार कर रहे हैं। सपा के बागी विधायक ने केंद्र और प्रदेश सरकार की योजनाओं का बखान भी किया। अभय सिंह ने कहा कि मिल्कीपुर क्षेत्र की जनता सरकार की कल्याणकारी योजनाओं से काफी लाभान्वित हुई है। मिल्कीपुर की जनता भाजपा उम्मीदवार को लेकर एक सुर में बात कर रही है। भाजपा प्रत्याशी की तारीफ करते हुए अभय सिंह ने कहा कि यह ऐसा परिवार है जो गरीबों की सेवा करता आया है और सभी लोग इन्हीं के पक्ष में वोट करने जा रहे हैं। सपा सांसद अवधेश प्रसाद पर आरोप लगाते हुए अभय सिंह ने कहा कि परिवारवाद लोकतंत्र का विकृत स्वरूप है। यहां की जनता भी आरोप लगा रही है कि सांसद और विधायक क्या दोनों एक ही परिवार से होंगे। क्या समाजवादी पार्टी में और नेता व कार्यकर्ता नहीं हैं।

मुख्यमंत्री योगी ने अयोध्या का किया हवाई सर्वेक्षण उमड़ी भीड़ का आसमान से किया आकलन

संवाददाता—अयोध्या। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को अयोध्या का हवाई सर्वेक्षण किया। सीएम ने राम जन्मभूमि, हनुमानगढ़ी और सरयू के घाट का हवाई सर्वेक्षण किया। प्रयागराज महाकुंभ में स्नान के पहले और बाद में बड़ी संख्या में श्रद्धालु लगातार अयोध्या पहुंच रहे हैं। श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधा देने के लिए ग्राउंड जीरो पर सीएम योगी के अधिकारी उतरे हुए हैं। मुख्यमंत्री की ओर से अयोध्या में पहुंच रहे श्रद्धालुओं की भीड़ की आसमान से निगरानी और आकलन किया गया। महाकुंभ मेले से लौट रहे श्रद्धालुओं की भीड़ से अयोध्या पटी हुई है।

शुक्रवार को भी रामनगरी में पांच लाख से अधिक श्रद्धालु दर्शन पूजन कर रहे हैं। इसी बीच सीएम योगी आदित्यनाथ ने अयोध्या का हवाई सर्वेक्षण कर मेला व्यवस्था की जानकारी ली है। अयोध्या में कमिश्नर गौरव दयाल और आईजी प्रवीण कुमार समेत अन्य आला अधिकारी जमे हुए हैं और क्षेत्र की निगरानी कर रहे हैं। बसंत पंचमी के स्नान के बाद यानी पांच फरवरी तक अयोध्या में श्रद्धालुओं की भीड़ के उमड़ने की संभावना है।

डिंपल यादव के रोड शो को लेकर आचार संहिता उल्लंघन का मुकदमा दर्ज, अनुमति से अधिक वाहन थे शामिल

संवाददाता—अयोध्या। सपा की स्टार प्रचारक सांसद डिंपल यादव के रोड शो को लेकर अज्ञात सपा कार्यकर्ताओं के खिलाफ थाना इनायतनगर में आचार संहिता उल्लंघन का मुकदमा दर्ज किया गया है। सब इंस्पेक्टर आलोक कुमार सिंह की तहरीर पर मुकदमा दर्ज किया गया है। रोड शो के दौरान अनुमति से अधिक वाहनों का प्रयोग किया गया। रायबरेली हाईवे के दोनों लेन को जाम कर दिया गया था।

समाजवादी पार्टी की स्टार प्रचारक सांसद डिंपल यादव मिल्कीपुर उपचुनाव में सपा प्रत्याशी अजीत प्रसाद के समर्थन में बृहस्पतिवार को रोड शो करने आई थीं। रोड शो का काफिला कुमारगंज से मिल्कीपुर पेट्रोल पंप तक करीब नौ किलोमीटर का था। शाम करीब चार बजे काफिला इनायतनगर थाना क्षेत्र की सीमा में प्रवेश हुआ। काफिले में करीब 150 दो पहिया और 150 चार पहिया वाहनों के साथ कई एसयूवी वाहन चल रहे थे।

व्यवस्था में तैनात थाना इनायतनगर के उप निरीक्षक आलोक कुमार सिंह ने आरोप लगाया कि काफिले के लिए कुल 85 वाहनों की अनुमति थी। इसमें 50 दोपहिया, 25 चार पहिया छोटे वाहन व 10 एसयूवी के लिए ही आवेदन किया गया था। ध्वनि विस्तारक यंत्र भी स्वीकृति से अधिक प्रयोग हो रहे थे।

राष्ट्रीय राजमार्ग 330 ए पर सहुलारा तिराहा पर दोनों पटरियों पर सपा कार्यकर्ताओं के वाहन इनायतनगर की तरफ आते रहे जबकि रोड शो के लिए एक साइड से ही अनुमति थी। इससे आवागमन की व्यवस्था बाधित हुई और अत्यधिक भीड़ व वाहन के प्रयोग से चुनाव आयोग के निर्देशों का उल्लंघन हुआ। उप निरीक्षक की तहरीर पर पुलिस ने अज्ञात सपा कार्यकर्ताओं के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की धारा 223 (ए) के तहत मुकदमा दर्ज किया है।

रोडवेज की दो बसों में टक्कर, 15 से अधिक यात्री घायल

संवाददाता—गोरखपुर। वाराणसी हाईवे पर गगहा के सराय चौराहा के पास शुक्रवार सुबह करीब 11 बजे बड़ा सड़क हादसा हो गया। महाकुंभ से लौट रही श्रद्धालुओं से भरी एक रोडवेज बस जब यात्रियों को उतार रही थी, तभी पीछे से तेज गति से आ रही राप्तीनगर डिपो की दूसरी बस ने जोरदार टक्कर मार दिया। इनमें 15 से अधिक लोग घायल हो गए। घायलों को तुरंत सीएचसी ले जाया गया, जहां से उन्हें जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया है। दुर्घटना के बाद हाईवे पर अफरा—तफरी मच गई। स्थानीय लोगों ने तुरंत घायलों को बस से बाहर निकाला और पुलिस को सूचना दी। गगहा थाना पुलिस मौके पर पहुंची और एंबुलेंस की मदद से सभी घायलों को सीएचसी भिजवाया, जहां से गंभीर रूप से घायल यात्रियों को जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया।प्रारंभिक जांच में हादसे की वजह तेज रफ्तार और लापरवाही बताई जा रही है। महाकुंभ से लौट रही बस यात्रियों को उतारने के लिए रुकी थी,वहीं, पीछे से आ रही राप्तीनगर डिपो की बस इतनी रफ्तार में थी कि ड्राइवर खड़ी बस में टक्कर मार दी। पुलिस और परिवहन विभाग के अधिकारी मौके पर पहुंचकर मामले की जांच कर रहे हैं। दुर्घटना में घायल यात्रियों की संख्या बढ़ने की आशंका है। पुलिस ने दोनों बसों को हाईवे से हटवाने के साथ ही कब्जे में ले लिया है और ड्राइवरों की तलाश की जा रही है।एसपी दक्षिणी जितेंद्र कुमार ने बताया कि घायल के बारे में जानकारी जुटाई जा रही है।अभी किसी की मृत्यु होने की सूचना नहीं है।

भारत में घुसे चीनी नागरिक को एसएसबी ने पकड़ा

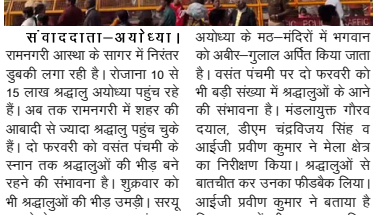

संवाददाता—सिद्धार्थनगर। भारत—नेपाल सीमा पर गुरुवार को चेकिंग के दौरान एसएसबी जवानों ने एक संदिग्ध व्यक्ति को पकड़ा। वह चीनी नागरिक बताया जा रहा है। उसके पास से कुछ कागजात और नेपाली करेंसी मिली है। एसएसबी और सुरक्षा एजेंसियां उससे पूछताछ कर रही हैं। हालांकि अधिकारी कुछ भी बताने से इनकार कर रहे हैं। मोहाना थाना क्षेत्र स्थित ककरहवा बॉर्डर के पिलर संख्या 544 के पास गुरुवार की शाम एसएसबी ककरहवा चौकी के जवान व ककरहवा पुलिस चौकी के जवान संयुक्त रूप से पैदल गश्त पर थे। इसी बीच सुरक्षा एजेंसियों ने नेपाल से भारत में अवैध रूप से प्रवेश करते हुए एक चीनी नागरिक को पकड़ लिया। तलाशी के दौरान उसके पास से नेपाल का 15 दिन का टूरिस्ट वीजा मिला। भारत में प्रवेश करने के लिए उसके पास कोई वैध कागजात नहीं थे। उसके पास मोबाइल, नेपाल और चीन की कुछ करेंसी मिली।

हनुमानगढ़ी में श्रद्धालुओं पर पुष्प वर्षा, लोग बोले— धन्यवाद अयोध्या पुलिस

संवाददाता—अयोध्या। रामनगरी में श्रद्धालुओं के ऊपर पुष्प वर्षा की गई। हनुमानगढ़ी में मौजूद एडिशनल एसपी डॉ. राजेश तिवारी ने श्रद्धालुओं पर पुष्प वर्षा की। बेहतर प्रशासनिक व्यवस्थाओं को देखते हुए श्रद्धालु बेहद उत्साहित दिखे। अयोध्या पुलिस को धन्यवाद दिया। अयोध्या पुलिस भारी भीड़ में श्रद्धालुओं की मदद कर रही है। अयोध्या पुलिस ने हनुमानगढ़ी पर पुष्प वर्षा कर श्रद्धालुओं का स्वागत किया। इस दौरान महाकुंभ से वापस लौटे श्रद्धालुओं ने प्रशासन की प्रशंसा की और कहा कि बहुत अच्छे इंतजाम किए गए हैं।

श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधा देने के लिए ग्राउंड जीरो पर सीएम योगी के अधिकारी उतरे हुए हैं। मुख्यमंत्री की ओर से अयोध्या में पहुंच रहे श्रद्धालुओं की भीड़ की आसमान से निगरानी और आकलन किया गया। महाकुंभ मेले से लौट रहे श्रद्धालुओं की भीड़ से अयोध्या पटी हुई है। शुक्रवार को भी रामनगरी में पांच लाख से अधिक श्रद्धालु दर्शन पूजन कर रहे हैं। इसी बीच सीएम योगी आदित्यनाथ ने अयोध्या का हवाई सर्वेक्षण कर मेला व्यवस्था की जानकारी ली है।

अयोध्या में कमिश्नर गौरव दयाल और आईजी प्रवीण कुमार समेत अन्य आला अधिकारी जमे हुए हैं और क्षेत्र की निगरानी कर रहे हैं। बसंत पंचमी के स्नान के बाद यानी पांच फरवरी तक अयोध्या में श्रद्धालुओं की भीड़ के उमड़ने की संभावना है।

अयोध्या आ रहे पश्चिम बंगाल के श्रद्धालुओं की कार मकान में घुसी, एक घायल

संवाददाता—अयोध्या। प्रयागराज महाकुंभ में स्नान कर गूगल मैप के सहारे अयोध्या आ रहे पश्चिम बंगाल के श्रद्धालुओं की कार ककोली गांव के कोटेदार नीरज सिंह के मकान में अनियंत्रित होकर घुस गई। हादसे में एक श्रद्धालु घायल हो गए। शुक्रवार को इस हादसे में दार्जलिंग के सिलीगुड़ी निवासी अमिलेन्दु शाहा (52) का बायां पैर टूट गया है। पक्के मकान का अगला हिस्सा भी क्षतिग्रस्त हो गया। उसमें रखा तख्त सहित अन्य सामान टूट गया। घायल श्रद्धालु को ग्रामीणों की मदद से 108 एंबुलेंस से इलाज के लिए तारुन सीएचसी भेजा गया है। कोटेदार नीरज सिंह का कहना है कि उनका काफी नुकसान हो गया है। चालक गूगल मैप के सहारे कार चला रहा था। कार मोड़ के पास पहुंची तो उसका ध्यान भटक गया। सीएचसी के फार्मासिस्ट चंद्र प्रकाश वर्मा ने बताया कि घायल का प्राथमिक उपचार करने के बाद मेडिकल कॉलेज, दर्शन नगर रेफर कर दिया गया है। कार में सवार अन्य श्रद्धालु बाल बाल बच गए।

राज्य टीम ने विजिट कर ली टीबी अभियान की जानकारी

संवाददाता—सिद्धार्थनगर। स्वास्थ्य विभाग की ओर से जनपद में चल रहे 100 दिवसीय सघन टीबी अभियान का 14 सदस्यीय राज्य स्तरीय टीम गांवों में विजिट कर अभियान की जानकारी ली। यह टीम अलग—अलग ब्लॉकों में दो—दो लोगों के साथ विजिट कर रही है। इस दौरान कई जगहों पर मिली कमियों को सुधार का निर्देश दिया गया। टीम में शामिल दो अधिकारियों ने शोहरतगढ़ ब्लॉक क्षेत्र के आयुष्मान आरोग्य मंदिर रमवापुर नानकार व पल्टा देवी में पहुंचकर लोगों से बातचीत करते हुए अभियान की हकीकत को जाना। राज्य स्तरीय टीम में शामिल आगरा एसटीडीसी के परामर्शदाता डॉ. अनुराग श्रीवास्तव व आगरा एसटीडीसी के बीसीजी टेक्निशियन परवेंद्र कुमार सबसे पहले शोहरतगढ़ सीएचसी पहुंचे। यहां से अधीक्षक डॉ. एसके भारती व वरिष्ठ उपचार पर्यवेक्षक वीरेंद्र प्रताप पुरी के साथ आयुष्मान आरोग्य मंदिर रमवापुर नानकार गए। यहां सीएचओ मोनी द्वारा 100 दिवसीय सघन टीबी अभियान में किए गए कार्यों की समीक्षा की। एएनएम वंदना यादव व आरोग्य मंदिर के अंतर्गत आने वाली आशा रीमा, रेखा, शांति आदि से टीबी रोग के लक्षण, 100 दिवसीय सघन टीबी अभियान, अति संभावित मरीजों आदि के बारे में जानकारी ली। इसके बाद टीम आरोग्य मंदिर पल्टा देवी पहुंची। यहां सीएचओ के कार्यों की समीक्षा की। प्रधान से मिलकर 100 दिवसीय सघन टीबी अभियान को लेकर गांव में हुए कार्यों के बारे में जानकारी हासिल की। इसके बाद टीम वापस सीएचसी पहुंची। यहां पहुंचकर टीम ने लैब में टीबी रजिस्टर को देखा। मौके पर मौजूद कर्मियों से टीबी मरीजों व संभावित जांच आदि का डाटा पूर्ण रूप से भरने का निर्देश दिया।

ज्यादा संख्या में पहुंचे भक्त, टूटे भीड़ के सारे रिकॉर्ड

संवाददाता—अयोध्या। रामनगरी आस्था के सागर में निरंतर डुबकी लगा रही है। रोजाना 10 से 15 लाख श्रद्धालु अयोध्या पहुंच रहे हैं। अब तक रामनगरी में शहर की आबादी से ज्यादा श्रद्धालु पहुंच चुके हैं। दो फरवरी को वसंत पंचमी के स्नान तक श्रद्धालुओं की भीड़ बने रहने की संभावना है। शुक्रवार को भी श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी। सरयू तट से लेकर रामलला व हनुमंतलला के दरबार में दिन भर जयकारे गूंजते रहे।

प्रयागराज के महाकुंभ में पहुंची श्रद्धालुओं की अपार भीड़ अयोध्या रुख कर चुकी है। पहले मकर संक्रांति और उसके बाद 26 जनवरी से अयोध्या में जुटी भीड़ ने अब तक के सारे रिकार्ड तोड़ दिए हैं। रोजाना तीन लाख के करीब श्रद्धालु रामलला के दर्शन कर रहे हैं। पांच लाख से अधिक हनुमानगढ़ी में माथा टेक रहे हैं। स्थानीय नागरिकों का मानना है कि हर वर्ष प्रयागराज से श्रद्धालु अयोध्या पहुंचते हैं, लेकिन इस वर्ष रामलला के श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ गई है। अयोध्या धाम में भीड़ बढ़ते ही गलियों में बैरिकेडिंग कर दी गई है, ताकि कोई भी इधर—उधर से प्रवेश न कर सके। हाईवे पर वाहन रोके गए हैं। द्वारों से धाम में वाहनों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाया गया है।

भीड़ वसंत पंचमी तक जारी रहने की संभावना है। इस दिन अयोध्या के मठ—मंदिरों में भगवान को अबीर—गुलाल अर्पित किया जाता है। वसंत पंचमी पर दो फरवरी को भी बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के आने की संभावना है। मंडलायुक्त गौरव दयाल, डीएम चंद्रविजय सिंह व आईजी प्रवीण कुमार ने मेला क्षेत्र का निरीक्षण किया। श्रद्धालुओं से बातचीत कर उनका फीडबैक लिया। आईजी प्रवीण कुमार ने बताया है कि श्रद्धालुओं की सुरक्षा व सुविधा की 24 घंटे मानीटरिंग की जा रही है। हनुमानगढ़ी पर मौजूद एडिशनल एसपी डॉ. राजेश तिवारी ने श्रद्धालुओं पर पुष्प वर्षा की। नगर आयुक्त संतोष शर्मा ने बताया की अयोध्या धाम के अंतर्गत यात्रियों को सड़क से ले जाकर उनका आश्रय स्थल तक छोड़ने के लिए अयोध्या धाम में 12 व अयोध्या कैंट में 6 गोल्फ कार्ट लगाए गए हैं।

श्रद्धालुओं में उमड़ी भीड़ की सुरक्षा के हाईटेक इंतजाम किए गए हैं। ड्रोन की मदद से क्षेत्र की निगरानी की जा रही है। यह ड्रोन 120 मीटर की ऊंचाई तक उड़ने और 3 से 5 किलोमीटर के दायरे में निगरानी करने में सक्षम है। ड्रोन की सहायता से संवेदनशील इलाकों, भीड़भाड़ वाले स्थानों और प्रमुख धार्मिक स्थलों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। यदि किसी संदिग्ध व्यक्ति या वस्तु की पहचान होती है, तो तुरंत उसकी जांच कर कार्रवाई की जा रही है।

अदालती नोटिस

सम्मन बरगज इनफिसाल मुकदमा
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाप्ता 200 ई0)
वाद सं0— 451/12
अदालत— श्रीमान तहसीलदार महोदय बांसी जिला—सिद्धार्थनगर
नूर मोहम्मद फारूकी आदि
बनाम
सकीला फारूकी आदि

1. नूर मोहम्मद फारूकी पुत्र मोहम्मद सफी साकिन मौजा महोखवा तप्पा असनार तहसील बांसी जिला सिद्धार्थ नगर ड्रीम कैसटेस्ट रवीन्द्र गार्डेन सेक्टर ई अलीगंज लखनऊ
2. जमील अहमद फारूकी पुत्र मोहम्मद सफी साकिन मौजा महोखवा तप्पा असनार तहसील बांसी जिला सिद्धार्थ नगर हाल मुकाम 504/14 इन्दरानगर लखनऊ इन्साफ नगर सेक्टर 10 3. शकील अहमद फारूकी पुत्र मोहम्मद सफी साकिन मौजा महोखवा तप्पा असनार तहसील बांसी जिला सिद्धार्थ नगर हाल मुकाम 504/14 इन्दरानगर लखनऊ इन्साफ नगर सेक्टर 10 4. मोहम्मद अहमद फारूकी पुत्र पुत्र मोहम्मद सफी साकिन मौजा महोखवा तप्पा असनार तहसील बांसी जिला सिद्धार्थ नगर हाल मुकाम जी0टी0बी0 नगर नियर अशकारी मार्केट करैली इलाहाबाद प्रयागराज

तारीख पेशी 07—02—2025

वाजेह हो कि ने आपके नाम एक नालिस बाबत दायर की है। लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख 07 माह 02 सन 2025 ई0 बवक्त 10 बजे दिन बमुकाम असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमे के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके हाजिरी के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तदलाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख 24 माह 01 सन 2025 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन बनाम कायम मुकाम कानूनी मुद्दाअलेह मुतवफ्फा
(आर्डर 22, कायदा 4)
न्यायालय—श्रीमान अष्टम् अति0 सिविल जज (जू0डि0) महोदय बस्ती जिला—बस्ती
मूलवाद सं0—671/2011
मायाराम आदि
बनाम
कोदई आदि

1/1/1 सीमा देवी पत्नी सुरेन्द्र 1/1/2 कप्तान उर्फ मोनू पुत्र सुरेन्द्र नावालिग बवलायत सीमा देवी माता स्वयं 1/1/3 कपूरलाल उर्फ सोनू पुत्र सुरेन्द्र साकिनान मौजा रखिया तप्पा नवाई परगना नगर पश्चिम तहसील हर्रैया जिला—बस्ती

तारीख पेशी 11—02—2025

हरगाह मुद्दई ने एक नालिश इस अदालत में बतारीख माह सन 20 ई0 बनाम मुद्दाअलेह के रूजू की थी, जो बाद की मौत हरगाह मुद्दई मजकूर ने एक दरख्वास्त इस अदालत में गुजारी है कि आप मुतवफ्फा मजकूर का कायम मुकाम कानूनी वारिस है और चाहता है कि बजाय उसके मुद्दाअलेह बनाये जांय।

लिहाजा आपको हुक्म होता है कि बतारीख 11 माह 02 सन 2025 ई0 बवक्त 10 बजे इस अदालत में हाजिर होकर मुकदमा मजकूर जबाबदेही कीजिये और अगर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा वगैर हाजिरी आपके मसमूअ और फैसला होगा।

बवक्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)
मूलवाद सं0— 368/2023
न्यायालय—श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) महोदय बस्ती जिला—बस्ती
सूर्यभान सिंह
बनाम
शिव नरेश सिंह आदि

1. शिव नरेश सिंह उम्र लगभग 60 वर्ष 2. सुवाष सिंह उम्र लगभग 57 वर्ष पुत्रगण विक्रमा सिंह साकिनान मौजा अभयपुरा तप्पा हरदी परगना बस्ती पश्चिम तहसील हर्रैया जिला बस्ती

तारीख पेशी 27—03—2025

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 27 माह 03 सन 2025 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

—द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)
मूलवाद सं0— 1336/2022
न्यायालय—श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) महोदय बस्ती जिला—बस्ती
चिन्ताराम
बनाम
मूसे आदि

1. मूसे उम्र लगभग 70 साल पुत्र श्रीराम (प्रतिवादी प्रथम वर्ग)
2. रामरंग उम्र लगभग 45 साल पुत्र बाबूलाल 3. खुशीराम उम्र लगभग 35 साल पुत्र सकुले 4. कपिलदेव उम्र लगभग 32 साल पुत्र रामजतन 5. अनिल उम्र लगभग 25 साल 6. विन्दु उम्र लगभग 22 साल पुत्रगण भुझावन 7. राम मिलन उम्र लगभग 47 साल पुत्र झगरू

—प्रतिवादीगण द्वितीय वर्ग

निवासीगण मौजा उदवतपुर तप्पा बनगवा परगना अमोढ़ा तहसील हर्रैया जिला—बस्ती

तारीख पेशी 21—03—2025

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 21 माह 03 सन 2025 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

—द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)
मूलवाद सं0— 741/2021
न्यायालय—श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) महोदय बस्ती जिला—बस्ती
राज कुमार
बनाम
श्रीमती मूरता देवी आदि

1. श्रीमती मूरता देवी पत्नी जोखन प्रसाद साकिन नरियांव तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरव पोस्ट पकड़ी धौरहरा तहसील व जिला—बस्ती

—प्रतिवादिनी प्रथम वर्ग

2. बाल किशुन पुत्र रामदेव 3. राघवराम पुत्र शिव नरायन 4. श्रीमती किसमती देवी पत्नी बरसाती 5. मु0 कान्ती पुत्री बरसाती 6. विनोद कुमार 7. लवकुश पुत्रगण बरसाती 8. सुदामा प्रसाद पुत्र रामदीन साकिनान मौजा नरियांव तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरव पोस्ट पकड़ी धौरहरा तहसील व जिला—बस्ती

—प्रतिवादीगण द्वितीय वर्ग

तारीख पेशी 27—03—2025

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 27 माह 03 सन 2025 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

—द0 हाकिम

राष्ट्रवाद व विकास के प्रतिमान थे अटल बिहारी

संवाददाता—गोरखपुर। रानीडीहा स्थित भाजपा के क्षेत्रीय कार्यालय पर शुक्रवार को मीडिया से बातचीत में जिलाध्यक्ष युधिष्ठिर सिंह ने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मशताब्दी वर्ष पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की चर्चा की।

जिलाध्यक्ष ने कहा कि भारत रत्न अटल बिहारी राष्ट्रवाद और विकास के प्रतिमान थे। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र के विकास और देश वासियों के उत्थान के लिए समर्पित किया। उन्होंने कहा कि अटल जी के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आगामी 15 फरवरी से लेकर 15 मार्च तक अटल विरासत सम्मेलन का आयोजन होगा। जिले के प्रबुद्धजनों व विशिष्टजनों को सम्मेलन में आमंत्रित किया जाएगा। अटल जी के व्यक्तित्व कृतित्व पर जो भी लेख व पुस्तक लिखी गई हैं, उनके लेखकों को सम्मानित किया जाएगा।

दैनिक भारतीय बस्ती

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1—4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।
सम्पादक दिनेश चन्द्र पाण्डेय

प्रबन्ध सम्पादक—दिनेश सिंह
संयुक्त सम्पादक—प्रदीप चन्द्र पाण्डेय
अयोध्या—फैजाबाद कार्यालय— चतुर्भुजी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट अयोध्या—फैजाबाद
लखनऊ कार्यालय— आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच. कानपुर रोड लखनऊ।
गोरखपुर कार्यालय— इलाहीबाग गोरखपुर।
मो09450567450 9336715406,
ई.मेलbhartiyabasti@yahoo.com
bhartiyabasti@gmail.com